ज्ञानामृत

फरवरी, 1981
वर्ष 16 ❋ अंक 9
मूल्य 1.75

अमृत-सूची

१. विश्व कल्याण महोत्सव (सम्पादकीय)	१	११. विनाश का महा घण्टा	१६
२. विश्व नव निर्माण (कविता)	३	१२. "सुखद आश्चर्य"	२२
३ हम परमपिता परमात्मा से मार्ग प्रदर्शना कैसे लें	४	१३. जीवन हमारा ऐसा हो	२२
		१४. प्यार का भूखा इन्सान	२३
४. सत्यम् शिवम् सुन्दरम्	८	१५. संगठन शक्ति	२५
५, सेवा समाचार चित्रों में	९	१६. ब्रह्मा बाप की महिमा	२७
६, आध्यात्मिकता ही जीवन रूपी पुष्प की सुगन्ध है	१३	१७. जीवन व्यर्थ नहीं है	२८
		१८. सेवा समाचार चित्रों में	२९
७. मान अपमान में समानता	१५	१९. गुप्त चुनाव	३३
८. याद तुम्हारी आती है (कविता)	१७	२०. मधुवन	३५
९. आराधना के आखिरी स्वर	१८	२१. हम परमधाम के राही हैं	३६
१०. देखें वतन से हमको बाबा	१८	२२. सतयुग और दैवी संस्कृति	३७

पांडव भवन नई दिल्ली में गृह मंत्री ज्ञानी जैल सिंह जी ब्र० कु० मन मोहिनी जी (दीदी) से मिल रहे हैं साथ में भ्राता जगदीश जी हृदय मोहन जी, भ्राता वृज मोहिन जी, तथा अन्य बहने भाई खड़े हैं।

इटारसी मेले के 'समाप्ति समारोह' के अवसर पर मध्य प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री भ्राता रघुवशी जी तथा मुख्य अतिथी रविनाथ जी व खभा जी बैठे हैं।

कोटा में राजयोग शिविर का उद्घाटन रेल मंत्री भ्राता केदार नाथ पांडे ने सपत्नीक मोमबत्ती जलाकर किया, साथ में ब्र० कु० ऊषा व सरोज खड़ा हैं।

कटक आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के लिये उड़ीसा के वित्त मंत्री भ्राता रघुनाथ पटनायक, उड़ीसा हाई कोर्ट के न्यायधीश गण पधारे थे।

इटारसी मेले में जैल सिंह एवं राज्य मंत्री ← भ्राता इतारी लाल व अन्य गणमान्य व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं।

विश्व-कल्याण महोत्सव

दिल्ली में लाल किला मैदान पर २४ फरवरी से ५ मार्च तक जो विश्व-कल्याण महोत्सव होने जा रहा है, उसके नामकरण के लिए जब आयोजकों की बैठक में चर्चा हुई तो यह बात सामने आई कि आज 'कल्याण' शब्द का संकुचित दृष्टिकोण से अर्थ किया जाने लगा है। कोई परिवार नियोजन को समाज-कल्याण (Social Welfare) मान रहा है तो कोई महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के कार्य को यह संज्ञा दे रहा है। अन्य कोई निर्धनों को अथवा बेरोज़गारों को सरकार द्वारा कुछ राहत मिलने के कार्य को कल्याण (Welfare Schemes) मानता है तो चौथा कोई वृद्ध जनों के लिए आश्रय-स्थान (Homes for the aged) बनाने के कार्य को कल्याण कहता है। यहाँ हम इस बात से इन्कार नहीं करते कि इस प्रकार के कार्यों द्वारा भी समाज के किसी-न-किसी वर्ग का अल्पकाल के लिए ही सही, कुछ तो भला हो ही जाता है। परन्तु वास्तव में 'कल्याण' शब्द उस कर्त्तव्य विशेष का वाचक है जो परमात्मा स्वयं करता है। उसी कर्त्तव्य के कारण परमात्मा को 'कल्याणकारी' अथवा 'शिव' भी कहा जाता है। वह कर्त्तव्य अन्य कोई भी नहीं कर सकता।

हमारे इस कथन के कई कारण हैं। इस कथन की सार्थकता को समझने के लिए एक तो यह ध्यान देने की ज़रूरत है कि व्यक्ति का सदा समाज से सम्बन्ध हुआ करता है। यदि सारे समाज का कल्याण न हो तो हम व्यक्ति का कल्याण भी नहीं कर सकते। यद्यपि यह कहना भी ठीक है कि समाज के कल्याण के लिए व्यक्तियों का कल्याण होना आवश्यक है क्योंकि समाज व्यक्तियों ही के संगठन का नाम है। दूसरे, यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि एकाँगी राहत को कल्याण नहीं कहा जा सकता। मान लीजिए कि किसी को आपने औषधि देकर उसके सिर के दर्द को तो दूर कर दिया परन्तु जो उसे तपेदिक (T.B.) की बीमारी है, वह यों ही लगी रही तो उसे हम स्वास्थ्य-प्रदान नामक कर्त्तव्य थोड़े ही कहेंगे। इसी प्रकार, यदि मनुष्य को किसी एक प्रकार की राहत मिल जाए परन्तु उसके जीवन में कष्ट, कलह, क्लेश, कलंक, कमज़ोरी, कमी या कठिनाई का दूसरा कोई रूप बना रहे तो उसे भी कल्याण कहना ग़लत है। परन्तु यह बात तो निःस्सन्देह है कि सर्वांगीण और सदाकालीन अथवा स्थाई सुख व्यक्ति और समाज दोनों को एक परमात्मा ही दे सकता है क्योंकि मनुष्य तो स्वयं ही इस परिवर्तन चक्र के आधीन हैं, अल्पज्ञ है, अपूर्ण है और कल्याण का अभिलाषी है।

आज हम देखते हैं कि जहाँ कहीं सनातन धर्म की किसी सभा का समापन होता है, वहाँ ये नारे लगाये जाते हैं—'विश्व का कल्याण हो, प्राणियों में सद्भावना हो, सत्य की जय हो, अधर्म का नाश हो, धर्म की स्थापना हो'

इसके बाद इसका आलाप किया जाता है :—

सर्वे भवन्तु सुखिना
सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु

मा कश्चित दुःख भाग भवेत

इसका भाव स्पष्ट है कि विश्व के कल्याण के लिए सभी का सुखी होना, सभी का नीरोग होना, सभी का परस्पर भ्रातृत्व की दृष्टि से व्यवहार करना तथा परस्पर सद्भावना से रहना, सतोगुण का प्रधान होना, धर्म की स्थापना होना तथा अधर्म का नाश होना—ऐसा नाश होना कि दुःख का भाग (अंश) भी न रहे···यह आवश्यक है। ऐसा ही भाव विश्व-कल्याण के बारे में हम ऊपर प्रगट कर आये हैं। इतना बड़ा कार्य तो एक सर्वशक्तिमान् परमात्मा द्वारा ही हो सकता है। मनुष्य तो केवल उसके लिए नारा ही लगा सकता है अथवा शुभ कामना ही कर सकता है तथा उसके लिए निमित्त बन सकता है।

अब जो विश्व-कल्याण महोत्सव दिल्ली में होने जा रहा है, उसका यही लक्ष्य है कि मनुष्य स्वधर्म में स्थित हो और उसके मन में जो अधर्म, विकार, अज्ञान और अशान्ति है, वह मिट जाये अर्थात उसमें दिव्य गुणों का उत्कर्ष हो और आसुरी लक्षणों का अन्त हो। जब मनुष्य स्वयं परमात्मा द्वारा दिये गए सत्य ज्ञान को प्राप्त करता है तथा सहज राजयोग का अभ्यास करता है, तभी वह हरेक से सद्भावना से व्यवहार करता है। और तभी वह अपना भी कल्याण कर सकता है और अन्य जनों के कल्याण के लिए भी निमित्त बन सकता है। अब होने वाले उत्सव में उसी कल्याणकारी ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग, दिव्य गुणों की धारणा इत्यादि को जीवन से सम्बन्धित करके विभिन्न वर्गों के कल्याणार्थ रुचिकर एवं प्रभावशाली रीति से दृश्य, श्रव्य, पाठ्य आदि रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

—जगदीश

—:o:—

भारत में शिव का आगमन

भारत ही वह सच खण्ड है जहाँ परमात्मा शिव आते हैं,
कोटों में कोउ, कोऊ में कोउ, शिव को जान पाते हैं।
यह धरती वह धर्मक्षेत्र है जिस पर गीता-ज्ञान दिया,
ज्ञान-सेवा - योग - धारणा सिखलाकर वरदान दिया,
सृष्टि चक्र की सूक्ष्म गति का शिव ही राज़ बताते हैं,
भारत ही वह सच खण्ड है जहाँ परमात्मा शिव आते हैं।
काम क्रोध मद लोभ ईर्ष्या की बेला जब अति बढ़ी,
जब-जब हानि हुई धर्म की धरती रोकर चीख पड़ी,
ब्रह्मा तन में तब शिव आकर दैवी बाग़ लगाते हैं,
भारत ही वह सच खण्ड है जहाँ परमपिता शिव आते हैं।
आज के युग के हर मानव को ग्रहण लगा है माया का,
जड़जड़ीभूत सृष्टि है नाम न है सुख छाया का,
जागो जागो अब तो जागो तुम को शिव जगाते हैं,
भारत ही वह सच खण्ड है, जहाँ परमपिता शिव आते हैं।

विश्व-नव-निर्माण !

ब्र० कु० रामऋषि शुक्ल

आ गये भगवान करने विश्व का कल्याण !
विश्व-नव-निर्माण !

सहज आत्म-स्वरूपता की मिली अभिनव दृष्टि
बदलती जीवन-विधा है, बदलती यह सृष्टि !
दिव्यता में हो रहा है मनुज का उत्थान !
आ गये भगवान करने विश्व का कल्याण !
विश्व-नव-निर्माण !

जाग्रता में आत्मा हम हो रहे हैं शुद्ध
प्रमुख पाँच विकार से हम कर रहे हैं युद्ध !
बुद्धि में आया हमारे सत्य-गीता-ज्ञान !
आ गये भगवान करने विश्व का कल्याण !
विश्व-नव-निर्माण !

आत्मा हम बन रहे हैं सद्गुणों के दक्ष
सृष्टि यह जिससे बनेगी सहज-निर्मल-स्वच्छ !
कलुष-कल्मष का धरा से हो रहा अवसान !
आ गये भगवान करने विश्व का कल्याण !
विश्व-नव-निर्माण !

सत्-असत् का विश्व में फिर है छिड़ा संग्राम
सत्य को जय-श्री दिलाने आ गये हैं राम !
गूँजता है विश्व में फिर सत्य का जयगान !
आ गये भगवान करने विश्व का कल्याण !
विश्व-नव-निर्माण !

धवल-पावन बन रहा फिर विश्व का परिवेश
यह नरक होगा तिरोहित और सारा क्लेश !
स्वर्ग वसुधा को बनाने का चला अभियान !
आ गये भगवान करने विश्व का कल्याण !
विश्व-नव-निर्माण !

—:०:—

हम परमपिता परमात्मा से मार्ग प्रदर्शना कैसे लें?

कुछ समय पहले 'गहन अध्ययन' (Deep Studies) का एक सिलसिला शुरू किया गया था। उसके अन्तर्गत कई अनुभवी बहन-भाइयों को विभिन्न विषयों पर अनुभव व्यक्त करने के लिये कहा गया था। प्रस्तुत प्रकाशन में हम नीचे दे रहे हैं चण्डीगढ़ की अनुभाविन अचल बहन जी को भेजे गये प्रश्न और उनसे प्राप्त उत्तर। इसमें 'बाबा' शब्द ज्योतिस्वरूप परमपिता शिव का वाचक है जो कि 'ब्रह्मा' बाबा द्वारा ही मार्गप्रदर्शना देते हैं।

—सम्पादक

प्रश्न—शिव बाबा ब्रह्मा बाबा द्वारा कहते हैं कि योग वायरलैस (Wireless) के समान है। कृपया अपने अनुभव से बतलाइये कि इस वायरलैस द्वारा हम बाबा से डायरेक्शन अथवा सन्देश कैसे लें? शिव बाबा अर्थात् परमपिता परमात्मा कहते हैं कि हम आपके मददगार और साथी हैं, कृपया बतलाइये कि हम वह मदद अथवा साथीपन का अनुभव कैसे करें और राय कैसे लें?

उत्तर

शिव बाबा से डायरेक्शन अथवा मदद लेने का साधन बुद्धि योग है। अर्थात् अपनी बुद्धि को शिव बाबा से जोड़कर हम बाबा से आवश्यक संदेश ले सकते हैं। अब यह बात सामने आती है कि अपनी बुद्धि को किस स्थिति में स्थित करें ताकि हमारी बुद्धि रूपी 'तार' का कनैक्शन शिव बाबा से सहज ही जुड़ जाये।

सर्वप्रथम हम किसी विशेष लक्ष्य को बुद्धि में रख कर ज्योतिस्वरूप शिव बाबा की याद में बैठते हैं और अपनी स्थिति को सम्पूर्ण अव्यक्त बनाने का प्रयास करते हैं। उसमें हमारा संकल्प देह के सम्बन्ध से उपराम होकर केवल एक शिव बाबा के ही गुणों के मनन से मग्न स्थिति की ओर बढ़ता है। कुछ ही समय के पश्चात् ऐसा अनुभव होने लगता है कि हम अव्यक्त लोक में अव्यक्त बाबा के सामने बैठे हुए हैं और मीठे शिव बाबा इस विषय पर अव्यक्त वार्तालाप कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह अनुभव होता है कि हम बाबा से बहुत ही समीपवर्ती सम्बन्ध की भासना ले रहे हैं; स्पष्ट रूप से अपने भावों को बाबा के सामने रख रहे हैं और बाबा हमें अमुक परिस्थितियों का समाधान दे रहे हैं। यह स्थिति काफ़ी समय तक बनी रहती है और जो भी कठिनाई अथवा समस्या सामने होती है, उसका विस्तार से समाधान बाबा द्वारा मिल जाता है। यह समाधान बहुत ही स्पष्ट होता है और उसको क्रियात्मक रूप में लाने के लिए पूरी रूपरेखा भी स्पष्ट हो जाती है, अर्थात् बाबा ने जो सन्देश दिया होता है, उसके लिये क्या-क्या पग उठाने हैं, उसकी स्पष्ट जानकारी मिल जाती है। बाबा द्वारा मिले हुए सन्देश में इतनी शक्ति समाई रहती है कि उसे व्यावहारिक रूप में लाने के लिये कोई कठिनाई पैदा नहीं होती अथवा किसी भी मनुष्यमत का कोई अन्य संकल्प रूप सन्देश/डायरेक्शन को व्यावहारिक रूप देने में रुकावट नहीं बनता। कई बार ऐसा भी होता है कि हम किसी अमुक समस्या के समाधान के लिये बाबा की याद में विशेष रूप से नहीं भी बैठते लेकिन यह दृढ़संकल्प बुद्धि में होने के कारण कि इस समस्या का समाधान हमने बाबा से लेना है, उसके परिणामस्वरूप कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है जैसे बाबा हमें अपने पास बुला रहे हैं। ऐसी स्थिति कभी आराम करते समय या कुछ छोटे-मोटे कार्य करते समय भी अनुभव होने लगती है और जब बाबा को खींच से अव्यक्त स्थिति में बाबा के सामने जाते हैं तो बाबा हमें उस समस्या का समाधान स्पष्ट रूप से देते हैं।

अत: यह आवश्यक नहीं कि हम समस्या का समाधान प्राप्त करने के लिये विशेष रूप से बाबा को याद करें या बाबा की याद में बैठें बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि हमारी स्थिति सम्पूर्ण अव्यक्त हो और ऐसा अनुभव हो कि हम किसी भी दैहिक अथवा प्रकृति के संकल्प के अधीन नहीं। उपरोक्त साधन द्वारा हमें बाबा द्वारा केवल किसी समस्या का समाधान ही नहीं मिलता बल्कि ऐसी स्थिति को बनाने से यह भी अनुभव होता है जैसे कि बाबा हमारे साथ है अथवा हर समय मददगार है। ऐसी स्थिति में कभी भी हम अपने आप को अकेला या असहाय अनुभव नहीं करते बल्कि सदैव यह अनुभव होता है कि मेरा साथी जो सर्वशक्तिवान, बुद्धिवानों की बुद्धि है और जिसके पास हर समस्या का सहज समाधान है, वह मेरे साथ ही साथ है और ऐसा अनुभव होता है कि जैसे मेरा हाथ उसके हाथ में है और बहुत ही आनन्द, खुशी से और बिना किसी उलझन के वह हर समस्या से पार ले जा रहे हैं।

मूल बात बाबा से संदेश प्राप्त करने या बाबा से मदद लेने की यही है कि हम सच्चे और स्पष्ट हों, अर्थात् बाबा के सामने हमारा मन का लेखा स्पष्ट और साफ़ हो। रिंचक मात्र भी, स्वार्थ का संकल्प न हो अथवा बुद्धि सम्पूर्णत: निष्पक्ष और कल्याणकारी भावों में स्थित हो और जिस समस्या का समाधान हम चाहते हैं वह किसी विशेष व्यक्ति अथवा विशेष वस्तु को खुश करने या प्राप्त करने के लक्ष्य से न होकर सर्व के कल्याण के लक्ष्य से होना चाहिये। बाबा से सन्देश या मदद लेने के लिये विशेष संकल्प जब रखा जाये तो उस समय स्थिति ऐसी बनी हुई हो कि अमुक समस्या का समाधान हमने बाबा से ही लेना है अथवा यह कहें कि उस समस्या का हल केवल बाबा द्वारा ही मिलेगा-- यह बुद्धि में दृढ़ निश्चय होना चाहिये और यह भी निश्चय दृढ़ हो कि बाबा अवश्य ही उपर्युक्त समाधान हमें देंगे।

प्रश्न—इस बात को कैसे जाँचें कि हमें जो डायरेक्शन मिली वह स्वयं बाबा की ही डायरेक्शन है ?

उत्तर

यह प्रश्न बहुत ही सूक्ष्म है और इसका स्पष्टीकरण इसलिये भी आवश्यक है कि कोई भी भाई-बहन अपने ही शुभ संकल्प के आधार पर ऐसा अनुभव न करने लगे कि जो उसकी आत्मा द्वारा निर्णय मिला है वह बाबा की ही डायरेक्शन है। योग-अभ्यासी भाई-बहन जब भी बाबा की याद में विशेष रूप से अपने संकल्प को एकाग्र करते हैं तो उनकी स्थिति अव्यक्त होने के कारण बहुत बार ऐसा होता है कि उनके संकल्पों में विशेष परिवर्तन का अनुभव होता है। उनकी बुद्धि बाबा की याद में स्थित होने के कारण बहुत ही सुन्दर निर्णय लेने लगती है अर्थात् यह कहें कि उनकी स्थिति दैहिक सम्बन्ध और संकल्प से जब उपराम हो जाती है तो उन्हें भी बहुत बार अपनी अनेक समस्यायें एवं कठिनाइयों के समाधान सामने आने लगते हैं। इसलिये सम्भव है कि ऐसी स्थिति में वह बहन-भाई ऐसा महसूस करने लगे कि जो समाधान उनके सामने आ रहा है, वह बाबा के द्वारा ही प्राप्त हो रहा है और यह सम्भव है कि वह अपनी अव्यक्त स्थिति में टच की गई कई योजनाओं को बाबा द्वारा प्राप्त सन्देश समझने लगें। ऐसी स्थिति तो बहुत से योग-अभ्यासी भाई-बहनों की होती ही है। अत: यदि प्रत्येक भाई-बहन यह समझने लगे कि जो बात अन्तर्मन में प्रादुर्भूत हुई है, वह बाबा का सन्देश है और अमुक स्थिति का वही एकमात्र हल है तो सम्भवत: एक और कठिनाई पैदा हो जायेगी कि इतने भाई-बहनों को बाबा ने एक ही समस्या के भिन्न-भिन्न समाधान कैसे 'टच' (touch) किये ? अत: यह बात आवश्यक है कि आत्मिक बल द्वारा लिये गये निर्णयों के और बाबा द्वारा प्राप्त निर्णयों का यह अन्तर स्पष्ट हो।

निज आत्मिक बल और बाबा द्वारा प्राप्त निर्णयों में अन्तर

१. बाबा द्वारा मिला सन्देश अथवा डायरेक्शन

और आत्मिक बल अथवा अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर मनुष्यात्मा द्वारा लिए गए निर्णयों में मुख्य अन्तर यही दिखाई देता है कि बाबा द्वारा मिला हुआ सन्देश अथवा डायरेक्शन बहुत ही स्पष्ट होता है और इसको व्यावहारिक रूप में लाने के लिये साधन भी बहुत ही स्पष्ट होता है और इसके साथ-साथ उस डायरेक्शन को क्रियात्मक रूप देने के लिये विशेष शक्ति का अनुभव होता है जबकि मनुष्यात्मा द्वारा लिये गये निर्णयों को व्यावहारिक रूप देने में यह बातें इतनी नहीं रहतीं।

२. बाबा द्वारा मिली हुई डायरेक्शन अथवा बाबा द्वारा मिला सन्देश लगभग प्रत्येक योग-अभ्यासी बहन-भाइयों को बहुत ही सुन्दर, सरल और प्रेरणादायक अनुभव होगा और ऐसे डायरेक्शन अथवा सन्देश को सुनकर सर्व भाई-बहनों में एक विशेष उत्साह एवं उमंग की लहर दौड़ जाती है और जिस आत्मा को यह सन्देश अथवा डायरेक्शन मिला होता है उसकी स्थिति तो और ही विचित्र बन जाती है; उसे ऐसा अनुभव होने लगता है कि अब अमुक कठिनाई अथवा समस्या समाप्त ही हो रही है, परन्तु आत्मिक बल द्वारा जो निर्णय लिया जाता है, उसे क्रियात्मक रूप देने में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ पदा हो सकती हैं और यह आवश्यक नहीं है कि अन्य भाई-बहन भी उस समाधान को पूर्णतया मानें और सहयोग दें।

३. बाबा द्वारा मिला संदेश अथवा डायरेक्शन क्योंकि सर्वकल्याणकारी और निष्पक्ष होता है इसलिये ऐसे डायरेक्शन को क्रियान्वित करने में बहुत ही दूरगामी परिणाम निकलते हैं। यह सम्भव है कि अल्पज्ञ बुद्धि कभी-कभी उस सन्देश के दूरगामी परिणामों को न जानने के कारण अपने अन्य संकल्प संदेश के सामने प्रस्तुत करें परन्तु कुछ ही समय के पश्चात यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि बाबा द्वारा मिले हुए सन्देश का परिणाम कितना अद्भुत और सर्वप्रिय होता है। इसलिये अमुक डायरेक्शन अथवा सन्देश वास्तव में ही बाबा द्वारा प्राप्त हुआ है, कुछ समय के पश्चात स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है।

४. बाबा द्वारा प्राप्त सन्देश बेहद के दृष्टिकोण को अपने में समाये रखता है। इसलिये ऐसा सन्देश प्रत्येक योग-अभ्यासी आत्मा के लिये प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। भाषा-भेद, जाति-भेद, प्रान्त-भेद और देश-भेद से ऊपर उठकर प्रत्येक आत्माएँ ऐसे सन्देश को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप देने का संकल्प स्वतः लेने लगती हैं।

५. बाबा द्वारा मिला हुआ ऐसा सन्देश अथवा डायरेक्शन सूर्य की किरण के समान होने के कारण उसके प्रकाश को मिटाया अथवा सदाकाल के लिये दबाया नहीं जा सकता, भले ही समय अथवा अन्य परिस्थितियों के कारण ऐसे सन्देश को परखने में कुछ मेहनत लगती है जिस प्रकार से आकाश पर छाये हुये बादल कभी-कभी सूरज को अपने में समा लेते हैं; परन्तु सूर्य पुनः अपना प्रकाश फैलाने में समर्थ है; इसी प्रकार बाबा द्वारा मिला सन्देश अथवा प्रेरणा प्रभावशाली होने के कारण व्यावहारिक रूप स्वतः बनाने में सक्षम है जबकि मनुष्यात्मा द्वारा लिये गये निर्णयों में इतनी क्षमता नहीं रहती है।

प्रश्न—कृपया जीवन के कुछेक ऐसे वृत्तान्त बताइयेगा जिनसे यह बात स्पष्ट हो जाय।

उत्तर

कुछ वर्ष पहले की बात है कि एक सेवा-केन्द्र पर एक संन्यासी ज्ञान योग सीखने की जिज्ञासा लेकर सेवा-केन्द्र पर आने लगा। बाहर से वह बहुत ही ईश्वरीय ज्ञान और योग में रुचि दिखाता था परन्तु उसके अन्दर कुछ और ही भावना थी। इस बात का मुझे कुछ भी पता नहीं था। वह ऋद्धि-सिद्धि के आधार पर अपना प्रभाव डालना चाहता था। एक दिन जब वह आकर सेवा-केन्द्र पर बैठा तो हमें कुछ और ही संकल्प आने लगे। फिर भी शुभ भावना लिये हमने उसे ज्ञान की कुछ बातें समझाईं और फिर उसे बाबा की याद में बिठाया परन्तु उसने अपनी ऋद्धि-

सिद्धि की विधि के अनुसार कुछ मन्त्रों का जाप शुरू कर दिया। हमने भी अपनी स्थिति बहुत ही अव्यक्त बनाई और बुद्धि योग रूपी वायरलैस के आधार पर बाबा से आवश्यक डायरेक्शन लेने का प्रयास किया। मीठे बाबा ने हमें सावधान किया और कहा कि इस व्यक्ति के मन में कुछ अशुभ संकल्प हैं। इसलिये आप बच्चों को शक्ति स्वरूप बनकर इस आत्मा का भी कल्याण करना है। योग के बल के आधार पर ही आप बच्चे ऐसे विघ्नों को सहज ही पार कर सकते हैं। देखते ही देखते उस संन्यासी ने अपना हाथ ऊपर उठाया और उसे हमारी ओर बढ़ाने की कोशिश की परन्तु बाबा की शक्तिशाली याद में स्थित होने के कारण हमारी ओर से उन्हें ऐसा प्रभाव मिला कि उसका हाथ वहीं का वहीं रुक गया और उसे भी हमारी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होने लगा। वह उलझन में पड़ गया और भागने की कोशिश करने लगा, परन्तु उससे भागा नहीं जा रहा था और उसे ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे उसे किसी उच्च शक्ति ने बांध लिया हो। वह हाथ जोड़कर हमसे क्षमा माँगने लगा और अपनी भूलों का पश्चात्ताप करने लगा।

७. एक बार की बात है कि कुछ व्यक्ति शराब के नशे में एक सेवा-केन्द्र पर अशुद्ध भावना लिये आ गये तो उस समय कोई अन्य भाई सेवा-केन्द्र पर नहीं था केवल दो-तीन कुमारियाँ ही सेवा-केन्द्र पर थीं। अब उन्हें इस समस्या के समाधान के लिये कोई हल नज़र नहीं आ रहा था। मीठे बाबा को याद किया तो बाबा ने बुद्धि योग-रूपी सूक्ष्म वायरलैस द्वारा उन्हें यह इशारा दिया कि तुम्हें इन्हें कुछ नहीं कहना है और न ही इन आत्माओं के प्रति कोई अशुद्ध संकल्प ही चलाना है बल्कि इन आत्माओं को तुम्हें योग का दान देना है। बाबा के मिले फ़रमान के अनुसार वह बहनें एक कमरे में बाबा की मीठी याद में बैठ गईं। कुछ ही समय के पश्चात् वह व्यक्ति एक-एक करके उठने लगे और बाहर चले गये। बाहर जाकर वे आपस में बातें करने लगे कि यह तो सत्य ही भगवान का घर है। हमने तो समझा था कि केवल दो-तीन कुमारियाँ कँवारी ही रहती हैं, परन्तु यहाँ तो किसी महान दैवी शक्ति का पहरा है।

८. इसी प्रकार इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में आने वाली एक माता ने भी अपना अनुभव सुनाया जिसे भी परिवार के कुछ सदस्य ज्ञान मार्ग पर चलने में रुकावट डालते थे। उसे शारीरिक कष्ट भी दिये गये परन्तु उसकी ईश्वरीय लग्न ज़रा भी कम न हुई। यह देखकर उसके सम्बन्धियों ने यह विचार किया कि इसे विषैली वस्तु खिलाकर ख़त्म कर दिया जाये। इस योजना का उस माता को कुछ भी पता नहीं था, परन्तु बाबा की याद की लग्न में रहने के कारण बाबा ने उसे यह सूक्ष्म इशारा दिया कि, बच्ची, आज तुमको कुछ भी खाना-पीना नहीं है, चाहे तुम्हारे सम्बन्धी कितना भी प्रयत्न करें। उसी अनुसार उसके मित्र सम्बन्धियों के अनेक बार कहने के बावजूद भी उसने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। और वह इस विषैली वस्तुओं के सेवन से बच गई। समय परिवर्तन पर जब उनके मित्र सम्बन्धियों ने भी उस माता के दृढ़ निश्चय को पहचाना तो अपने आप ही यह स्वीकार किया कि सचमुच आप का मददगार शिव बाबा है—यह पहचान हमें अब मिली है।

९. कुछ समय पहले की बात है कि एक बहन ने यह सुन्दर अनुभव सुनाया कि उसे कोई भी बहुत बड़ी ईश्वरीय सेवा की ज़िम्मेवारी लेने में बहुत संकोच रहता था। कारण यह कि वह समझती थी कि मेले जैसा कोई बहुत बड़ा प्रोग्राम करने के लिये बहुत ही आत्मिक शक्ति और अन्य शक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। और कोई भी कार्य ठीक प्रकार से होने की बजाय बिल्कुल ही छोड़ दिया जाये तो अच्छा है, परन्तु दिल में उमंग और उत्साह प्रेरणा भी थी कि इतना बड़ा कार्य हो जाये तो अच्छा है। उस बहन को मीठे बाबा ने अपनी बुद्धि योग रूप वायरलैस द्वारा २-३ बार ऐसा सुन्दर साक्षात्कार करवाया कि यह कार्य

कोई बहुत बड़ा नहीं और तुम बच्ची बहुत भली प्रकार से इसे कर सकती हो। जब भी वह अमृतबेले बाबा की याद में बैठती तो बाबा उसे ऐसे साक्षात्कार करवाता कि जैसे वह बहुत ही सुन्दर सजे हुए मेले में बाबा के साथ चक्कर लगा रही है और अनेक आत्माएँ मेले को देखकर हर्षित हो रही हैं। इस प्रकार २-३ बार बहुत ही सुन्दर साक्षात्कार होने के पश्चात् उसने यह महसूस किया कि उसमें कोई विशेष शक्ति आ गई है और उसे मेले-जैसा महान कार्य बहुत ही आसान लगने लगा और जब उसने इस कार्य करने का दृढ़ संकल्प लिया तो उसे पूर्ण सफलता मिली और बहुत ही सुन्दर अनुभव पाया।

ऊपर लिखित अनुभव तो बहुत ही थोड़े हैं जो कि शब्दों द्वारा व्यक्त किये गये हैं। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे अनुभव बाबा द्वारा प्राप्त होते रहते हैं जिनसे ऐसा दृढ़ निश्चय होता है कि मीठे शिव बाबा स्वयं ही सृष्टि के नव-निर्माण का कार्य गुप्त रूप में कर रहे हैं, वह कैसे अपने बच्चों के मददगार हैं कदम-कदम पर डायरेक्शन देते हैं और उन डायरेक्शन को अमल में लाने के लिये भी शक्ति प्रदान करते हैं।

सत्यम् ! शिवम् ! सुन्दरम् !

ब्रह्माकुमार रामऋषि शुक्ल

हमने परम सत्य देखा जग के झूठे व्यापार में।
हमने शिव बाबा को पाया ब्रह्मा-तन-साकार में।
परम सत्य हैं परमपिता शिव उनकी बड़ी कमाल है
सृष्टि-जगत के आदि-अन्त वही बताते हाल हैं
दिव्य अवतरण होता उनका कलियुग-सतयुग मध्य में
आज उपस्थित वही मध्य का पावन संगम-काल है।
युग परिवर्तन आने वाला है सचमुच, संसार में।
हमने शिव बाबा को पाया ब्रह्मा-तन-साकार में।
सृष्टि बनेगी सुन्दर फिर से, सुख के दिन फिर आ रहे
माया के जंजाल—कष्ट के, दुःख के दिन हैं जा रहे
वही रुद्र का ज्ञान-यज्ञ विरचित देवों के देश में
नयी ऋचाएँ नये ब्राह्मण आत्म-यज्ञ के गा रहे !
दैवी जीवन विकसित होता है फिर श्रेष्ठाचार में।
हमने शिव बाबा को पाया ब्रह्मा-तन-साकार में।
आहुतियाँ पड़ रहीं यज्ञ में तन-मन की, सर्वस्व की
शांति-गिरा गूँजती सत्य के मंगलमय वर्चस्व की
समय उपस्थित पुनः आसुरी संस्कृति के संहार का
जय-जयकार देव-संसृति की, देवों के नव-विश्व की !
विश्व-घृणा में नहीं चलेगा, किन्तु चलेगा प्यार में।
हमने शिव बाबा को पाया ब्रह्मा-तन-साकार में।

डरे गाँव में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता के० डी० कलिग कर रहें हैं। साथ में ब्र० कु० सत्यवती ब्र० कु० रजनी, डेरगांव के प्रमुख भाई शम्भु सोमानी व अतुल गोस्वामी खड़े हैं।

धर्म स्थल लक्ष दिपोस्तव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। प्रदर्शनी में वीरेन्द्र हेडगे, उनकी माँ शिव बाबा का परिचय प्राप्त कर रहे हैं ब्र० कु० शकुन्तला एक बिन्दु पर उनको समझा रही हैं। साथ में अन्य बहन भाई खड़े हैं।

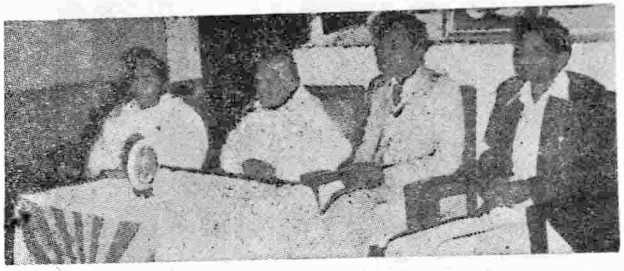

मेरठ सार्वजनिक कार्य क्रम में मंच पर कमल सुन्दरी बहन, विनोद बहन, कलैक्टर मेरठ, व अन्य भाई बैठे हैं।

लखनऊ डिप्टी कमिश्नद रमाकान्त तिवारी योग शिविर का उद्घाटन कर रहे हैं।

सौराष्ट के राजयोग कैम्प में डाक्टरों का एक विशाल ग्रुप दिखाई दे रहा है।

रोपड़ में ब्र० कु० राज कुमारी काँग्रेस आई० के सेक्ट्री हँसराज को साहित्य भेंट कर रही हैं।

H में आध्यात्मिक प्रदर्शनी देखने के पश्चात एस० [० एम० आना गौतम जो अपने विचार लिख रहे हैं। m में बी० के० सरला जी बैठी हैं।

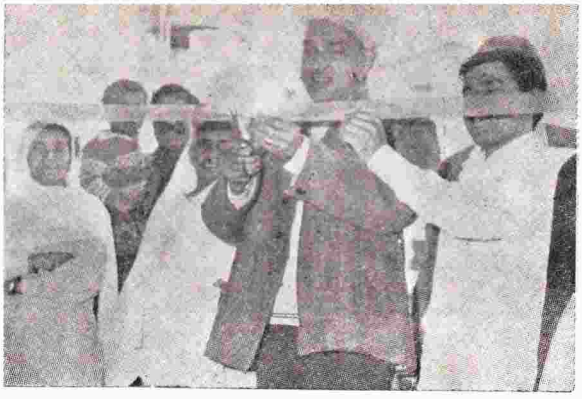

हमीरपुर में प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर पालिका के प्रधान काश्मीरी लाल जी कर रहे हैं। उनके साथ अन्य भाई-बहिनें खड़े हैं।

k ठा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता दिनकर p करते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनके साथ भ्राता चन्द्रकांत o ई, भ्राता विठ्ठल भाई शाह तथा अन्य भाई खड़े है।

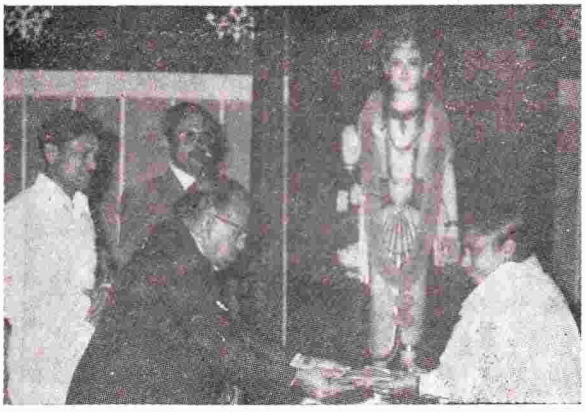

पटियाला गीता भवन में अव्यक्त दिवस समारोह में मुख्य अतिथि थापर इंजिनीयरिंग टैक्नोलाजी डिग्री कालेज के प्रिंसिपल को ब्र० कु० कमला जी ईश्वरीय सौगात भेंट कर रहीं हैं।

इलकल में स्मृति दिवस समारोह के अवसर पर भ्राता के० टी० नायक 'पिता श्री' के चित्र का अनावरण कर रहे हैं। उनके साथ भ्राता कुलकर्णी जी, भ्राता दमोलर डगा जी तथा अन्य भाई-बहिन उपस्थित हैं।

चालीस गांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन भ्राता श्रीचरणम खर्चे म्यूनिसिपल मैजिस्ट्रेट कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० पार्वती, ब्र० कु० संतोष भाई, ब्र० कु० सतीश भाई तथा अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

डिगबोई में आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। मंच पर भाषण करते हुए भ्राता ए० के० चंदा प्रशासकीय प्रबन्धक आसाम आयल कं०, दिखाई दे रहे हैं उनके पास ब्र०कु० निर्मल शांता जी व रमेश भाई बैठे हैं।

लखनऊ मे आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन सहायक जिला-धीश जो कर रही हैं। साथ में वहां के बहिन-भाई खड़े हैं।

पटियाला मेले में शिवमयी शक्ति दुर्गा के एक माडल का उद्घाटन पंजाब हाई कोर्ट के एडवोकेट भ्राता आर० एल० पाली जी दीपक जला कर रहे हैं। साथ में अपने भाई-बहिनें खड़े हैं।

गुन्नी कोपल (कर्नाटक) में राजयोग प्रदर्शनी के अवसर पर अवकाश प्राप्त जनरल के० एम० करियप्पा अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० नागरायन जी तथा ब्र० कु० बोलम्मा बैठीं हैं।

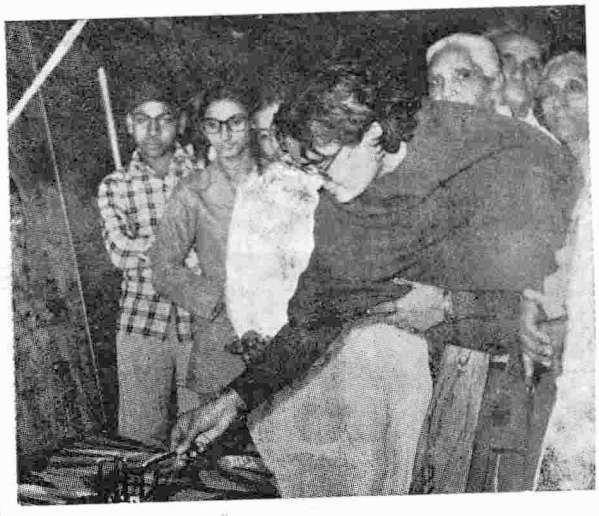

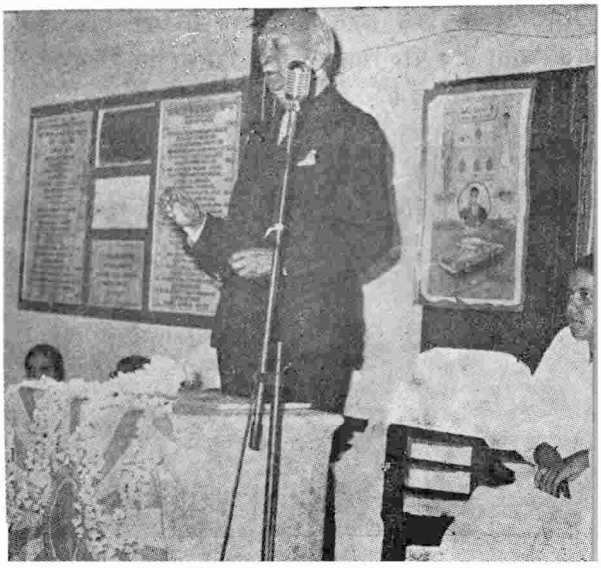

H याला मेले में प्रेस कान्फ्रैन्स के अवसर पर ब्र० कु० अमीर
IM। जी मेले का उद्देश्य बता रहे हैं।

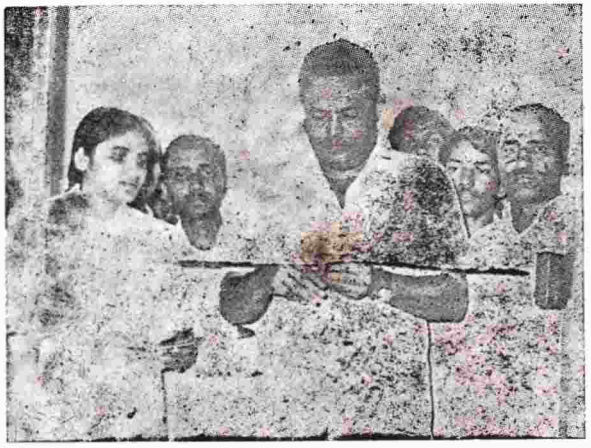

I सहाय में ब्र० कु० सुरमिश्ता बैंक के मैनेजर को चित्रों की व्याख्या दे रही हैं, साथ में ब्र० कु० त्रिपता व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

F सी मेले में अवलोकन करने के पश्चात सीनियर डी० S ई० भ्राता बी० पी० सिंह ब्र० कु० विमला एवं रेलवे के अन्य अधिकारी खड़े हैं।

चन्द्रपुर सेवा केन्द्र की ओर से एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका उद्घाटन डाक्टर भ्राता धन जी कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० कुसुम, शारदा खड़ी हैं।

कवीठा में ब्र० कु० पुष्पा, भ्राता दिनकर जी को चित्रों की व्याख्या दे रहीं हैं।

लखनऊ-रेडियो डायरेक्टर कमला पति मिश्रा को ब्र० कु० विनोद पिता श्री के चित्र पर व्याख्या दे रहे हैं।

आध्यात्मिकता ही जीवन रूपी पुष्प की सुगन्ध है

ब्रह्माकुमारी शीला, काठमाण्डौ (नेपाल)

आज सारा संसार भौतिकता का पुजारी बन गया है। मानव अपने दैनिक जीवन को सुखी बनाने के लिए भौतिक साधनों का ही आधार लेने लगता है और आध्यात्मिकता से दूर होता जाता है। मगर जीवन एक पुष्प है और आध्यात्मिकता इसकी सुगंध है। आध्यात्मिकता में वह शक्ति है जिसके आगे दूसरी सब शक्तियाँ फीकी लगने लगती हैं। साइंस की शक्ति से सिनेमा, रेडियो, टेलीविज़न, हवाई जहाज़ तथा रॉकेट आदि मिले। किसी ने दिल के राज़ बता डाले, किसी ने मन की आशायें पूरी कर दीं, किसी ने गिरते पहाड़ों को थाम लिया और किसी ने मुर्दों को ज़िन्दा कर दिखाया। इन सभी चमत्कारों को देख लेने के बाद क्या मनुष्य की प्यास बुझ गयी है? क्या इन चमत्कारों से मनुष्य सन्तुष्ट हो गया है? "लेकिन नहीं" मनुष्य की चाहना दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जाती है।

सत्य और अहिंसा

आध्यात्मिकता हमें सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाती है। मगर भौतिकता से प्रभावित होकर मानव समझता है कि झूठ बोले बिना जीवन को सफल बनाना कठिन है। वह समझता है कि अश्लील उपन्यास, सिनेमा, शराब, क्लब आदि जैसे मनोरंजन के बिना जीवन कैसे बितायें! इनके बिना जीवन बेकार लगता है। आज का मनुष्य जीने के लिए नहीं खाता परन्तु खाने के लिए जीता है। चाहे परिवार में कितनी भी तंगी हो, फिर भी मनचाहे पदार्थों पर खर्चा करने के लिए धन निकल ही आता है। चाहे मनुष्य कितना भी व्यस्त क्यूं न हो, लेकिन खराब काम करने के लिए उसे समय मिल ही जाता है। मगर परमात्मा का नाम या आध्यात्मिक ज्ञान लेने में न तो मनुष्य की रुचि है और न ही उसे समय मिलता है। कहावत है कि जहाँ चाह वहाँ राह (Where there is a will, there is a way)। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है सारे संसार में दुःख और अशान्ति के बादल घने होते जाते हैं। दिन-प्रति-दिन जन-साधारण के लिए जीवन का संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। इसका क्या कारण है? यही कि मनुष्य आध्यात्मिकता को छोड़कर भौतिकता को अपने जीवन का आधार बनाते जा रहे हैं। जैसे आत्मा के निकल जाने पर शरीर बेकार हो जाता है, इसी प्रकार आध्यात्मिकता के निकल जाने पर जीवन नीरस, तथा दुःखी बन जाता है। जब से बच्चा पैदा होता है शिक्षा उसका अंग बन जाती है। पहले-पहले माता-पिता से बच्चे को शिक्षा मिलती है। इसके बाद वह शिक्षक अथवा गुरु के द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है। परन्तु फिर भी आध्यात्मिकता का विकास नहीं होता। आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता संसार में, समाज के बीच में रहते हुए, गृहस्थ व्यवहार को कुशल पूर्वक चलाने के लिए होती है न कि घर-बार का संन्यास करके जंगल में जाने से आध्यात्मिक शिक्षा मिलती है। आत्मा का परिचय, परमात्मा का परिचय और श्रेष्ठ कर्मों की पहचान ही आध्यात्मिक शिक्षा है जिसके द्वारा मनुष्य गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए सत्कर्म कर सकता है। शिक्षा में आध्यात्मिकता लाने से ही जीवन में तथा विश्व में शान्ति हो सकती है।

आध्यात्मिक शिक्षा का महत्व

आध्यात्मिक शिक्षा की कमी होने के कारण ही चरित्र बिगड़ता है और अनुशासनहीनता बढ़ती है क्योंकि इसका नाम ही शिक्षा से मिटा दिया है जब कि आध्यात्मिकता पवित्रता, सुख और शान्ति की

जननी है। जब किसी को ईश्वरीय ज्ञान सुनने के लिए कहा जाता है तो वह कहते हैं कि हमारे पास समय ही नहीं है। ग़रीब अपनी ग़रीबी की समस्याओं को सुलझाने में व्यस्त है और धनी अपने धन की सुरक्षा और वृद्धि करने में व्यस्त है। मगर यह एक कोरा बहाना है। जबकि मानव व्यर्थ के चिन्तन, गप-शप और इधर-उधर के फालतू स्थानों में जाने में कितना समय नष्ट करता है जिसके फलस्वरूप उसे अशान्ति और असन्तुष्टता ही प्राप्त होती है। समय का सदुपयोग ईश्वर-चिन्तन, आत्म-चिन्तन और ज्ञान-चिन्तन में किया जा सकता है। परमात्मा की याद से मानसिक एकाग्रता प्राप्त होती है और प्रत्येक कार्य सहज रूप से हो जाता है। सर्वशक्तिमान परमात्मा से योग युक्त व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है जिससे वह कठिन-से-कठिन कार्य भी सहज ही कर लेता है। कठिनाइयाँ मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में सहायक होती हैं। कठिनाइयों का सामना करने से मनुष्य की आत्मा में बल आता है। ईश्वरीय स्मृति में रहकर प्रसन्नतापूर्वक कठिनाइयों का सामना करना चाहिए। क्योंकि योग ही विकारों रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का एक बहुत बड़ा हथियार है इसलिए हमें अब सावधान होना चाहिए कि समय बहुत कम है। जीवन में दो चीज़ों का भरोसा नहीं है एक "श्वास" और दूसरा "समय"। इस लिए जीवन में आध्यात्मिकता का होना अति आवश्यक है।

आध्यात्मिक शक्ति का जीवन से उतना ही संबंध है जितना आँखों से ज्योति का अथवा सूर्य से प्रकाश का। आध्यात्मिक शक्ति ही जीवन रूपी भवन की नींव है। आज सेवा का स्थान स्वार्थ ने और त्याग का स्थान तृष्णा ने ले लिया है, परन्तु इसका परिणाम यह हुआ कि मानव का जीवन सार-रहित और सस्ता बन गया। आज हर चीज़ महँगी है परन्तु मनुष्य का जीवन सस्ता हो गया है।

धर्म ही कर्म का आधार

धर्म ही कर्म का आधार है। जब मनुष्य धर्म-भ्रष्ट होता है तो वह कर्म-भ्रष्ट भी हो जाता है। यहाँ धर्म का मतलब आजकल के शारीरिक धर्मों से नहीं बल्कि उस आध्यात्मिक शिक्षा से है जिससे जीवन की धारणा ऊँची बनती है। आज मनुष्य झूठ रूपी रेत (बालू) की नींव पर सुखी जीवन रूपी भवन का निर्माण करना चाहता है, परन्तु वह भूल गया है कि सच्चाई कभी छिप नहीं सकती। इसीलिए कहा गया है कि—

सच्चाई छिप नहीं सकती बनावट के असूलों से,
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से।

ज़रा प्रकृति की ओर नज़र डालिये। धरती में गेहूँ का एक बीज बोने से कितने सारे गेहूँ निकल आते हैं। आम का एक बीज कितना फल कितने वर्षों तक देता रहता है। अब ज़रा मनुष्य के व्यावहारिक जीवन की ओर देखें कि यह संसार से कितना कुछ लेता है, और उसके बदले में देता कितना है? यही कि लेता अधिक है, देता कम। तब उसका अपना जीवन तथा समाज सुखमय कभी नहीं बन सकता है। आज तो मनुष्य त्याग और सेवा जैसे शब्दों का नाम सुनकर ही घबरा जाते हैं। इसका कारण है आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति की कमी है। ये शिक्षा केवल एक परमपिता परमात्मा के द्वारा ही मिल सकती है, जिससे जीवन सुखमय और आनन्दमय बन सकता है और व्यावहारिक जीवन सुधर सकता है।

—:o:—

मान-अपमान में समानता

(ब्र० कु० सूरजकुमार, मधुबन, आबू)

अजय के मन पर ग़म की काली रेखाएँ नज़र आ रही थीं, और विजय···? वह तो खुशी के गान गुनगुना रहा था।

विजय—अजय, आज चेहरा सूख क्यों गया है ? क्या हुआ बन्धु ?

ये तुम्हारे मित्र यों ही उल्टी-सीधी बातें करते रहते हैं—अजय ने झुँझलाहट के साथ कहा। कितना भी अच्छा काम करो, इनका काम ही ग्लानि करना है।

और वो तो हँसी-मौज मना रहे हैं—विजय ने कहा।

क्या सचमुच ? अजय की सलवटें खुली। जब कहने वाले ही हल्के हैं तो सुनने वाला ही भारी क्यों हो ? अजय की उदासी रुई की तरह उड़ गई। यों ही हम अपना मन भारी कर लेते हैं, कहने वाले कहकर चले जाते हैं···। शायद उन्हें ये भी एहसास नहीं कि हमने कुछ अनर्थ किया है। और हम यों ही उनकी एक-एक बात का चिन्तन करके अपनी परम शान्ति को कूड़े में डाल देते हैं। स्वयं का आत्मघात करते रहते हैं।

अजय ने ज्ञान का गुह्यता से मनन प्रारम्भ किया, उसकी समझ में आया कि हम अनेक आत्माओं का यहाँ जो मिलन हुआ है, अवश्य ही हम पूर्व के ८४ जन्मों के भी साथी हैं। हरेक आत्मा से हमारे अच्छे व बुरे कर्मों का खाता संलग्न है। तो कहीं ग्लानि और कहीं महिमा तो हमारे ही सम्बन्धों के ही कारण है। उस दिन से अजय निन्दा-सूचक शब्द सुनकर घबराता नहीं है, बल्कि उसे सरल भाव से देखकर सदा खुशी में रहता है। उसकी एक बात समझ में आ गई।

"कि महत्त्व ग्लानि का नहीं, बल्कि ग्लानि सुनकर हमारी अवस्था का है"

उसने पक्का कर दिया है—

कोई एक ग्लानि करे तो समझो एक विकर्म विनाश हुआ,

दूसरी ग्लानि करे तो दूसरा भी विकर्म विनाश हुआ, और तीसरी ग्लानि करे तो तीसरा भी विकर्म विनाश हुआ।

जब कोई उसकी ग्लानि करता है तो वह खुश होता है, यह सोचकर कि विकर्म विनाश हो रहे हैं।

अब तो अजय की स्थिति काफ़ी मज़बूत है।

एक दिन विजय ने बहुत ही प्रभावशाली भाषण किया, परन्तु आलोचकगण उसमें चार चाँद लगाये बिना न रह सके। विजय की खुशी ही मिट गई।

यह देखकर अजय ने ओजपूर्ण शब्दों में कहा—

विजय, तुम्हारी ग्लानि तो होनी ही चाहिए।

क्यों ? विजय ने रुष्ट भाव ज़ाहिर किया।

क्योंकि अगर तुम्हारी ग्लानि नहीं होगी तो तुम बलवान कैसे बनोगे ?

अजय ने मुस्कराते हुए कहा।

विजय को भी हँसी आ गई। उसकी ग़म की जंज़ीरें टूट गईं···

अजय ने कहा—विजय, मनुष्य की यही सबसे बड़ी कमज़ोरी है कि वह ग्लानि से डरता है, इसीलिए कमज़ोर रहता है, वह ग्लानि का आह्वान नहीं करता।

देखो विजय किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

निंदक नियरे राखिये···

वास्तव में निन्दा करने वाले सही रूप में हमारे परममित्र हैं, जो हमें सदा सावधान रखते हैं कि तुम कोई भी भूल न करना।

दूसरी मुख्य बात तो यह है कि ये तो विधान है, जीवन में जैसे और सभी बातों का सन्तुलन आवश्यक है। अपमान मनुष्य को अधिक सिखाता है, मान की मार को सहन करना हरेक आत्मा नहीं जानती।

इसलिए सदा याद रखना चाहिए—

"अपमान सह लेने वाला व्यक्ति सदा सुख से सोता है, सुख से जागता है, और इस संसार में सदा सुख से विचरता है, परन्तु अपमान करने वाला सर्वनाश को प्राप्त होता है।"

अजय और विजय इस प्रकार के विचारों से एक-दूसरे को बलवान बनाते जाते थे। दोनों की मित्रता एक-दूसरे की परम सहयोगी थी। एक दिन दोनों ईश्वरीय सेवार्थ किसी दफ़्तर में गये। एक अधिकारी से ज्ञान-चर्चा हो ही रही थी कि एक महाशय ने ग्लानि की पुष्प-वर्षा शुरू की। दोनों शान्त चित्त होकर अडोलता पूर्वक उनकी बातें सुनते रहे। उनकी ऐसी महान् व शान्त स्थिति देखकर वह अधिकारी बहुत प्रभावित हुआ। और काफ़ी देर तक जब चुप-चाप अजय-विजय दोनों ही उसे नम्र भाव से देखते रहे, तो उसे भी आत्मग्लानि-सी महसूस होने लगी और वह अपना-सा मुँह लेकर वहाँ से चला गया।

बाहर आकर अजय-विजय की चर्चा हुई।

अजय—क्या कारण है विजय कि जब कोई ज्ञान-रहित मनुष्य हमारी ग्लानि करता है तो हम अडोल रहते हैं ?

विजय—उस समय हम यह नहीं भूलते कि हम बहुत महान् हैं। हमें स्वयं की श्रेष्ठता में सम्पूर्ण निश्चय रहता है, और दूसरा अज्ञानी होने से हमारी उसके प्रति शुभ दृष्टि रहती है।

हाँ, उस समय हम अपनी हार महसूस नहीं करते, बल्कि शान्त रहने में बड़ा ही गौरव महसूस करते हैं—अजय ने कहा।

विजय बोला—सचमुच अगर हम ईश्वरीय नशे में या स्वमान में रहते हैं तो दूसरों की हर बड़ी बात भी हमें छोटी लगती है और मन भारी नहीं होता। परन्तु जब हम स्वयं ही छोटे विचारों में रमण कर रहे होते हैं तो दूसरों की छोटी-छोटी बातें भी बड़ी लगती हैं और हम उन बातों को भी कदम-कदम पर विघ्न महसूस करते हैं जो कुछ भी हैं नहीं।

एक गुह्य रहस्य और है विजय—अजय ने बताया जब हमें कोई कुछ कहता है तो अगर हम उस आत्मा का चिन्तन करते हैं तो हमारा और उस आत्मा का कर्मों का खाता और ही क्लिष्ट हो जाता है यानि परचिन्तन से खाता बढ़ता है। और अगर हम उसकी व्यर्थ बातें सुनकर भी उसके प्रति शुभ-भाव-नाएँ रखते हैं तो दोनों का खाता समाप्त हो जाता है और फलस्वरूप वह आत्मा भी अपना वह कर्म छोड़ देती है।

विजय—हाँ बात तो बड़ी गहन है।

अजय को एक कहानी याद आ गई।

देखो विजय आपको याद होगा, ऐसी कई सत्य कहानियाँ हैं। एक मनुष्य प्रतिदिन आकर महात्मा बुद्ध की ग्लानि किया करता था। महात्मा जी रोज़ चुपचाप सुन लेते। यही क्रम कई दिनों तक चलता रहा। बुद्ध के मन में उसके प्रति घृणा उत्पन्न नहीं हुई। एक दिन महात्मा बुद्ध ने उसे बुलाकर मिठाइयाँ दीं। बस उस पापी का मन पिघल गया और वह बुद्ध के चरणों पर गिर पड़ा।

विजय ने कहा—अजय, हमें यह बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि आज हमारी महिमा होती है तो कल ग्लानि भी होगी। अगर आज हम महिमा सुन-कर फूल जायेंगे तो कल ग्लानि सुनकर उदासी का काला मुँह अवश्य ही देखना पड़ेगा; परन्तु अगर हम महिमा स्वीकार ही नहीं करेंगे तो ग्लानि से पीड़ित भी नहीं होंगे।

अजय—परन्तु बाबा ने ये भी तो कहा है कि ब्राह्मण कुल में किसी की महिमा होना, ये भी तो ऊँचे भाग्य की निशानी है।

विजय—हाँ, हमें महिमा-योग्य कर्म तो करने ही चाहिएँ, परन्तु महिमा सुनकर हममें अहं का भाव जागृत न हो। हम यह कभी न भूलें कि "ये जो कुछ भी हो रहा है यह मेरी शक्ति नहीं है, बल्कि उस

परमपिता की शक्ति का ही प्रताप है।"

अजय ने कहा, हाँ, इस प्रकार के विचारों से अब मेरे जीवन में काफी दृढ़ता रहती है। परन्तु फिर भी मनुष्य तो मनुष्य ही है। शायद धर्म स्थापना के कार्य में विघ्न पड़ने भी आवश्यक ही हैं। मुझे तो तुलसीदास के ये वचन भी काफी मदद करते हैं कि—

"दुष्टों के कटुवचन सज्जनों को घायल नहीं कर सकते" परन्तु फिर भी समय पर ये सब कुछ भूल जाता है। अपमान सहकर निर्संकल्प रहने के लिए बहुत ही विशाल मनोबल की आवश्यकता है। ऐसे न हो कि हम सह तो लें परन्तु अन्दर ही अन्दर घुलते रहें।

विजय—हाँ, मैंने भी ऐसा ही देखा कि जब हमें कोई कुछ कहता है तो हम उसके शब्दों के चिन्तन में चले जाते हैं और अनुमान का कड़ुवा नमक डालकर यों ही अपने स्वाद को किरकिरा कर देते हैं।

इसके विपरीत अगर हम स्वचिन्तन में रहते हैं तो हमारी संकल्प शक्ति से दूसरी आत्माएँ भी अपना कटु स्वभाव छोड़कर मित्रभाव में आ जाती हैं। और अजय···

ज्ञानीपन का तो लक्षण ही है विपरीत बातों में, विपरीत परिस्थितियों में, विपरीत वातावरण में स्वयं को सन्तुलन में रखना। अगर हम भी ज्ञानहीन मनुष्यों को तरह उत्तेजित होते रहेंगे तो बाकी हमारा ज्ञानी होने का प्रमाण ही क्या रहा ?

ठीक बात है विजय···अजय ने कहा।

याद तुम्हारी आती है

(स्थाई) मीठा मधुबन देख के बाबा
याद तुम्हारी आती है
तेरी कर्म भूमी बाबा
याद तुम्हारी दिलाती है

(१) दिवारें कहती वृक्ष यह कहते
मेरे बाबा मधुबन में रहते
गोप गोपियों के चेहरों से
झलक तुम्हारी आती है
मीठा मधुबन देख के बाबा·····

मुझे भी एक दिन अव्यक्त बाबा के महावाक्य सुनकर समझ में आया कि ग्लानि करना, ईर्ष्या रखना, ये तो मनुष्य का स्वभाव है। बाबा ने कहा था कि तुम अच्छा करो या बुरा करो, कहने वाले तो कहेंगे ही, कहने वालों ने तो किसी को भी नहीं छोड़ा··· इसलिए,

कहने वालों का काम है कहना
और तुम्हारा काम है,
बढ़ते चलना, न कि रुकना—

जबकि कहने वाले नहीं रुकते, तो सुनने वाले क्यों रुकें। इस बात ने मुझे तो बेगमपुर का बादशाह बना दिया। परन्तु यह भी देखना होता है कि हमारी कोई ग़लती तो नहीं है। अगर हमने कोई भूल की है तो दूसरे लोग तो हमें कहेंगे ही। वहाँ हमारा काम है स्वयं को बदलना।

विजय ने अन्त में कहा कि···

हाँ इन सबसे हमें एक बात तो अवश्य ही सीख लेनी चाहिए कि दूसरों की ग्लानि करना अति तुच्छ कर्म है। इससे न हमारा लाभ, न दूसरों का। इसलिए जब हम अपनी ग्लानि नहीं सुनना चाहते तो हमें किसी की ग्लानि करनी भी नहीं चाहिए। क्योंकि दूसरों की निन्दा ग्लानि करने में समय गँवाने से वातावरण दूषित हो जाता है और इससे नवयुग के स्थापना के कार्य में उतनी ही देर होती है अथवा यों कहें कि निन्दा ग्लानि करना माना भगवान के श्रेष्ठ कार्य में बाधक बनना।

लेखक बी० के० मोहन (अमृतसर)

(२) जब जब मधुबन की ओर आये
प्रत्यक्ष तेरे गुण हम पाये
हर बात तेरी देती है शिक्षा
कर्म तुम्हारे दिखाती है
मीठा मधुबन देख के बाबा·····

(३) गूंजे मधुबन में मुरली प्यारी
देती तुम्हारी श्री मत न्यारी
चारों ओर हर कोने से
किरणें तुम्हारी आती हैं
मीठा मधुबन देख के बाबा·····

आराधना के आखिरी स्वर

इन्तज़ार की घड़ियाँ लम्बी होती जा रही थीं, भक्त प्रभु-मिलन के लिए अनेक कर्मकाण्ड अपनाये जा रहे थे। मन की आँखें विकल हो रही थीं। धीरे-धीरे वह दशा भी आ पहुँची जब भक्ति का साम्राज्य चारों ओर फैल गया। अनेक धर्म पिताओं ने सृष्टि-वृक्ष की अनेक डालियाँ फैला दीं, जिसमें मुख्य इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, मुहम्मद साहब, शंकराचार्य, गुरू नानक इत्यादि। भक्ति की अनेक डालियों से अनेक प्रकार के फल-फूल तो खिले लेकिन अल्पकाल की हो प्यास मिटा सके। अशान्ति एवं असन्तुष्टता में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी। स्वधर्म पथगामी आत्माएँ परधर्म (दैहिक धर्म) में जा फँसीं। अब भक्ति अल्पकाल की स्वार्थसिद्धि का साधन बन गई। इस स्वार्थपरता ने सत् पथ से विचलित कर दिया। ईश्वर के नाम पर देवी-देवताओं की जड़ याद-गारों, गुरुओं एवं विद्वानों की पूजा शुरू हो गई। धर्म से धारणा ने अलग होकर कर्मकाण्ड का रूप ले लिया। मन की शान्ति खतरे में पड़ गई, असन्तुष्टता ने आ घेरा। देखते-देखते अज्ञान-अन्धकार घना होने लगा और तब भक्तों के दर्द की आवाज़—

निशा घनी होती जाती है,
पथ आलोकित कौन करेगा ?
प्रभु, तू कब तक गुप्त रहेगा ?

सुन कर स्वयं भक्तों के भगवान, ज्ञान सूर्य परमात्मा सत् मार्ग को आलोकित करने के लिए इस धरा पर आज से ४४ वर्ष पूर्व अवतरित हुए। नहीं तो भक्ति की दलदल में फँसी हुई, विकारों की जेल में बँधी हुई, अन्धकार में भटकती हुई समस्त मानवता को सही ठिकाना कौन दे ?

बात सन् ३७ की है जब ज्योति विन्दु शिव परमात्मा ने एक साधारण मानवीय तन, जिसका नाम उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा रखा, में प्रविष्ट कर ज्ञान का प्रकाश दिया और अपना रथ बनाया। ज्ञान-सागर शिव परमात्मा उस भाग्यशाली रथ के द्वारा अनेक ज्ञान गंगाओं को जन्म देकर विश्व को पावन बनाने का अद्वितिय एवं दिव्य कार्य कर रहे हैं। उसके द्वारा ही उन्होंने अविनाशी अश्वमेध रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा है जिसका दूसरा नाम प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय है। प्रभु-मिलन की युगों की प्यास बुझाने का यही एक ही अवसर है। यही वह पुरुषोत्तम युग है जब भक्ति का फल देने भगवान आये हैं। प्रीति की रीति न जानने के कारण भक्त आत्माएँ अनेक मार्गों पर भटकती रहीं। अब स्वयं खुदा खुद का नालेज दे प्रीति की रीति सिखला रहे हैं। इस नालेज के आधार पर अपनी आत्मा को पावन बना कर मिलन का आनन्द अभी ही मना लें क्योंकि यह अन्तिम अवसर है अभी नहीं तो कभी नहीं।

देखे वतन से हमको बाबा

लेखक बी० के० मोहन (अमृतसर)

(स्थाई) देखे वतन से हमको बाबा
प्रत्यक्ष करने अपने बच्चों को
बैठे वतन से हमको बाबा

(१) अब भी वतन से साकार में आके
बाबा ही अपने वादे निभाते
आते हमारे वतन में बाबा
प्रत्यक्ष करने अपने बच्चों को·····

(२) कार्य सभी खुद आप हो करते
बच्चों को बाबा आगे हो करते
साथी सदा हो हर पल में बाबा
प्रत्यक्ष करने अपने बच्चों को·····

(३) हमको बनाने लिए फरिशता
तोड़ा तूने देह का रिशता
ले जाते हो सूक्ष्म में बाबा
प्रत्यक्ष करने अपने बच्चों को·····

विनाश का महाघण्टा

बी० के० सुरेखा

ग्रीष्म ऋतु की साँझ थी। दिन भर की गर्मी, परेशानी से मन बेचैन हो जाता; अतः जब सायंकाल हुई तो छत पर जाकर सुस्ताने की इच्छा होने लगी। वस्तुतः हमें वर्षा, सर्दी या गर्मी सहने की आदत हो जानी चाहिए पर हम हैं कि हर ऋतु में असुविधा अनुभव करते हैं। वह शाम भी ऐसी ही बेचैनी से भरी हुई थी। मैंने घर का सारा काम-काज समाप्त किया और छत पर जा पहुँचो। सब निश्चिन्त सो रहे थे। मैंने कनखियों से उसकी ओर देखा और फिर लेट गयी। बीच-बीच में हवा के झोंके बदन को स्पर्श कर जाते थे। आकाश में चन्द्रदेव अपनी सोलह कलाओं के शृंगार सहित दीप्त थे। शीतल चाँदनी मन को बड़ी सुखद लगी। मैं तुरन्त सो गयी।

किसी की अकस्मात चिल्लाहट से नींद खुली। प्रकाश के "विनाश-विनाश" शब्दों को सुनकर मैं भी घबरा गयी। उसे छाती से लगाकर पूछा, "क्या हुआ बेटा ? क्या तुमने कोई भयानक सपना देखा ? तुम इस तरह क्यों देख रहे हो ? क्या हुआ; कुछ बोलो ना !" "अरे माँ, विनाश आया, विनाश। अपना विनाश।" अब मुझसे हँसी रोकी नहीं जा रही थी। जाने दे। अविनाश के स्थान पर उसने केवल विनाश कहा होगा। सोचा कि होगा उसका कोई दोस्त। पर उसकी गंभीर मुखमुद्रा बड़ी विचित्र लग रही थी। जैसे-वैसे उसे समझा-बुझाकर फिर सुलाया और मैं भी सो गई।

पर वह उस दिन से अजीब बर्ताव करने लगा। घर के सब लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। पास-पड़ोस के लोग भी उसे कुछ और ही समझने लगे। प्रकाश अब चर्चा का विषय हो गया था। लोग अब उसकी उपेक्षा करने लगे थे। पर मैं उसके व्यवहार का निरीक्षण करने लगी। उसका चलना, उठना-बैठना, बोलना, सोना औरों से अलग लगते थे। इतनी कम उम्र में भी वह अन्तर्मुखी हो गया था। उसको देख कर लगता था, मानो उसकी आँखें कुछ ढूंढती हैं। कहीं कोई बात अवश्य हुई थी। पर उसे समझाने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि "प्रकाश तुम ऐसा बर्ताव क्यों करते हो। तुम्हारी उम्र के लड़के तो ऐसे नहीं हैं, आदि आदि।" समझाने को समझाया जा सकता था पर बात किसी से कही नहीं जाती थी। अवश्य कुछ अनहोनी होने वाली थी और उसका दुःखद इन्तज़ार करते रहने के अलावा मैं भी कुछ नहीं कर सकती थी। मैं उसके परिवर्तित व्यवहार को समझने की कोशिश कर रही थी। बात काफ़ी आगे बढ़ गई थी। मैं चिन्तित थी पर बाकी सब अपने-अपने कामों में मशगूल थे।

एक दिन प्रकाश अन्धेरा होने पर घर पहुँचा। घर में और कोई नहीं था। मैं रोटी बना रही थी। जैसे रोटी फूलती, वैसे ही मेरे विचार भी गुब्बारे बनते जा रहे थे। मैं और रसोई दोनों व्यस्त थे। इस तल्लीनता को उसके "माँ" के स्वर ने तोड़ा। बहुत दिन बाद उसे मेरी याद आई थी। मैंने प्रकाश की ओर देखा। वही गंभीर मुद्रा, चेहरे पर वही झलक। मैं उसे एकटक देख रही थी और वह धीरे-धीरे पास आ रहा था। मेरी स्थिति को मैं खुद भी समझ नहीं पा रही थी। रोटी सेंकने में अब मेरी रुचि नहीं रही। वह बोला, "माँ, बहुत भूख लगी है, गरम-गरम रोटी खिलाओ।" प्रति दिन सबके खा चुकने के बाद ठण्डा भोजन करने वाला आज गरम रोटी माँग रहा है ! क्या आश्चर्य है ! मैं हर्ष से ओत-प्रोत हो रही थी। मैंने मन-ही-मन अपनी कुलदेवी को प्रणाम किया, मन्नतें मानीं। "प्रकाश को ऐसा ही ज्ञान दे माता।" तत्पश्चात् उसे बिठाया और गरम भोजन परोसा और धीरे से पूछा, "तुम आज जल्दी आ गये बेटे ? तुम क्यों ऐसा बर्ताव करते हो ? सब

लोग तेरे दोष दिखाते हैं। अन्य बच्चों जैसा बर्ताव करो, बेटा। अभी तुम छोटे हो। अभी तुम्हारी पढ़ाई होनी है, शादी-ब्याह होना है। ऐसा बर्ताव करोगे, तो भविष्य में क्या होगा ?" मैंने उपदेशों की झड़ी लगा दी, परन्तु मेरे अन्तर में कुछ दूसरा ही कोलाहल था और वह शाँत भाव से खा रहा था। बीच-बीच में मेरी ओर देख लेता और हँस देता। लगता था, मानो मेरा उपदेश समझ रहा हो। फिर उसने कहा, "माँ, मेरे लिए तुम्हें कष्ट सहने पड़ते हैं न ?" अगर ऐसी बात है तो मैं कहीं दूर चला जाऊँगा।" "नहीं बेटे, ऐसी बात नहीं है। तुम ऐसी बात फिर कभी न करना। तुम अभी छोटे हो। अभी तुम्हें बहुत पढ़ना है। बड़ा अफसर बनना है। फिर जहाँ जी चाहे चले जाना।" "तब तुम वहाँ आओगी, माँ ?" "हाँ बेटे, जरूर आऊँगी।" "मां, तुम्हें एक बात बताऊँ ! पर तुम यह किसी और से नहीं कहना।" "बता बेटे, मैं किसी से नहीं कहूँगी।" "मैं १-२ दिन के लिए अ-विनाश के पास जा रहा हूँ।" अविनाश–विनाश ! मेरी आँखों के सामने उस दिन का प्रसंग खड़ा हो गया। वही गंभीर मुद्रा ! परन्तु मैंने अपने आपको सम्हाला। मैंने कहा, "तुम आगे क्या कहना चाहते हो ?" "दो दिनों की छुट्टी है, लौट आऊँगा।" "तब ठीक है, हो आओ।"

वह तुरन्त खड़ा हो गया और जाने लगा। मैंने पुकारा, "अरे, अब अन्धेरा हो रहा है, कल सुबह चले जाना।" पता नहीं उसने मेरी बात सुनी या नहीं पर वह क्षण में अदृश्य हो गया। "किसी से नहीं कहूँगी, बेटा।" मैं बुदबुदाते हुए घर के अन्दर दाखिल हुई। दो दिन बीते, सप्ताह बीत चुका। अब घरवाले परेशान होने लगे। जब मुझसे पूछा तो मैंने सारी बातें कह सुनाई। दो दिन तो बीत चुके थे, अब और कितने दिन रहस्य न खोलें ? "वह अपने दोस्त से मिलने गया है, अविनाश या विनाश ऐसा ही कोई नाम है।" सबने मुझ पर उपालम्भ छोड़े। मैं कुछ समझ नहीं पा रही थी। घरवालों ने और अधिक रूचि नहीं दिखाई, ढूँढने की बात तो दूर रही। मानो कह रहे हों—अच्छा हुआ, चला गया। जैसे कि घर में किसी का उससे कोई सम्बन्ध न हो। उसकी उम्र की भी किसी को पर्वाह नहीं। कैसे लोग हैं ! पर मैं बेचारी उसे कहाँ खोजती ? मैं अपने मन को समझाते-समझाते दिन काट रही थी। उसकी यादें बराबर आती थीं। आँसुओं की झरझर रुकती न थी। कभी मैं दूर तक नज़र दौड़ाकर देखती, कभी किसी बुरे ख्याल से डर जाती। मेरी स्थिति विचित्र हो रही थी। मेरे मन से प्रार्थना के शब्द निकलते, "माता जगदम्बा, वह कहीं भी रहे, सुखी रहे। तुम उसे महान् बनाना माँ।"

दिन बीत रहे थे। काल के प्रवाह ने दु ख का आवेग हल्का कर दिया था। मैंने कहीं पढ़ा था– काल दुःख की दवा है। आज उसका अनुभव हुआ। सचमुच समय महान् शक्तिशाली है जो बड़े से बड़े दुःख को भी प्रभावहीन कर देती है। ऐसा न होता तो लोग पागल हो जाते। आज उस बात को बीते काफ़ी समय हो गया था। इस बीच अनेक परिवर्तन हुए, उसके बचपन के संगी साथी कहाँ-से-कहाँ पहुँच गये थे। कुछ लोगों की शादी हो गई। कुछ मिठाइ दे गये। किसी को अच्छी नौकरी मिल गयी। कोई उच्च शिक्षा के लिए विदेश चला गया। यह सब सुनकर मन उचट जाता। मन अन्दर से दुःखी था। मन उसे कहना चाहता था, "मेरे लाल, तुम भी कुछ बन सकते थे। तुमने यह क्या किया, बेटा ! तुम कहाँ हो, कैसे हो ?" कई तरह के प्रश्न उभरते थे और आँसू धरती को भिगोते रहते थे।

एक दिन क्या आश्चर्य ! गाँव में डौंडी पीटी जा रही थी—"सुनिये गाँव वालों, अभूतपूर्व अवसर का लाभ उठाइये। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के तत्त्वाधान में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। यहाँ आकर आत्मा-परमात्मा का परिचय प्राप्त कीजिये। सुख-शाँति, आनन्द का लाभ लीजिये। विनाश नज़दीक आ रहा

है। जल्दी कीजिये, आइये। "विनाश" शब्द को सुन कर दिल धड़कने लगा। ऐसा लगा मानो किसी ने पर्वत की चोटी से नीचे ढकेल दिया हो। "प्रकाश जिस विनाश की ओर गया, यह वही तो नहीं है। विनाश आ रहा है। क्या प्रकाश को भी साथ लायेगा ? अगर वह आया तो मैं उसे फिर कभी नहीं जाने दूंगी।" और मैं देर तक 'विनाश' के सम्बन्ध में सोचती रही। "वह अब कितना बड़ा हो गया होगा ? कैसा दिखता होगा वह ? क्या मैं उसे पहचान सकूंगी।" कई तरह की कल्पनाएं मन में आ रही थीं और मैं विचारों के बवंडर में खो रही थी। अचानक किसी 'माँ-माँ' की पुकार सुनी। पड़ौसी का लड़का था। वह अपनी माँ को प्रदर्शनी दिखाने के लिए ले जाने की ज़िद कर रहा था। मैंने उसके पास जाकर पूछा, "मैं आती हूँ, चलोगे मेरे साथ ?" वह तयार हो गया। वह मुझ स्कूल में ले गया। स्कूल के प्रवेश-द्वार में कुछ सफ़ेद वस्त्रधारी स्त्री-पुरुष और बालक-बालिकाएँ थीं। "आइये, आइये माताजी" सहसा एक बच्ची ने कहा। वह मुझे चित्र दिखाने लगी। आत्मा-परमात्मा कुछ ऐसा हा कह रही थी। सतयुग का बना चित्र बहुत अच्छा था। छोटे-छोटे नन्हे मुन्ने, राधाकृष्ण हिंडोले पर बैठे हुए थे। नौसर्गिक सौन्दर्य की भी अनेक झाँकियाँ थीं। बार-बार देखने को जी चाहता था। उसी समय उस बालिका ने कहा, "इस ज्ञान को प्राप्त करने पर मनुष्य सतयुग में चला जाता है।" एक भाई ने कलियुग का चित्र दिखाया। आइये, इधर देखिए। और लोग उधर जा रहे थे। मैं भी उधर चल पड़ी। वह कह रहा था— अब कलियुग समाप्त हो रहा है। शीघ्र विनाश होने वाला है। उन्होंने धम-धम कुछ बजाया और चारों ओर आग फैल गयी। घर-बार, आदमी आग में जल रहे थे। उनकी भयंकर चीखें सुनाई दे रही थीं। उनके आर्त स्वर डरावने थे। बदन पसीने से लथपथ होने लगा। "क्या इसी विनाश की ओर मेरा प्रकाश गया है ? अरे भगवन्, प्रकाश", मैं चिल्लायी।

जब होश में आयी तब अपने आपको अस्पताल में पाया। होश-हवाश धीरे-धीरे लौट रहे थे। बीती बात समझ में आ रही थी। इतने में साक्षात्कार में देखा, वह कल वाली महिलाएँ मेरी ओर बढ़ रही हैं। उन्होंने मेरी पूछताछ की। उन्होंने कहा "आपका प्रकाश खुश है, सुखी है। बाबा के पास है। वही शुभ्र वस्त्रधारी बाबा, जो चित्र में हैं। जब आप अच्छी हो जायेंगी तब कभी आइये, आपको सारा ज्ञान समझायेंगे।" मैं प्रकाश को बाबा के पास देखने लगी। देखते ही देखते लगा कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे ऊपर ले जा रही है। चारों ओर घना जंगल, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, रास्ता कठिन है और बाबा मुझे ले जा रहे हैं। हम एक ऊँचे टीले पर पहुँचे। वहाँ एक विशाल घण्टा धूप में चमक रहा था। उस पर कुछ लिखा था और एक भीमकाय वाला व्यक्ति उसे बजा रहा था। बाबा ने एक बच्चे को बुलाया। उस बच्चे का तेजोमय मुखमण्डल देखकर मैं तो चकित रह गयी। क्या कहें, क्या करें ? मुझे कुछ भी सुझाई नहीं पड़ता था। बाबा ने बताया "बेटी, यह तुम्हारा प्रकाश है। वह केवल मेरी ओर देखकर मुस्करा रहा था। इतने में सुई (Injection) की चुभन हुई, पर वह दृश्य नज़रों से दूर नहीं जा रहा था। महाविनाश का घण्टा ! पर वह अब मधुर नाद कर रहा था। पर पता नहीं वह राक्षसकाय व्यक्ति कब उसे ज़ोर-ज़ोर से बजा दे। अब मैं विनाश का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त कर चुकी थी। इस बात से हर्ष हुआ कि मेरा प्रकाश कुशल है। मुझे अपने आप पर इस ख्याल से गर्व हो रहा था कि मैं प्रकाश की माँ हूँ।

—:o:—

जीवन हमारा ऐसा हो···

बी० के० सूरज कुमार, आबू

जीवन हमारा ऐसा हो,
कष्टों से न घबरायें हम,
कुचल-कुचल कर काँटों को,
एक सुखद पथ बनायें हम।
जीवन के हर एक श्वाँस में
बजते हो विजय के ही गान
कदमों की हर एक आहट से
मिलता हो प्रभु का ही ज्ञान।
हम तीर से बढ़ते चलें,
माया के इस वीरान में,
होते चलें कुर्बान हम,
बस एक प्रभु के प्यार में।
बजती हो उमंगों की तानें
चुनौति हमें स्वीकार हो,
न घबराये तूफ़ानों से हम,
संघर्ष सुख-आधार हो।
मिट जाए हम निज लक्ष्य पर
झण्डा हमारे हाथ हो,
विपदा की राहों में सदा
बाबा हमारे साथ हो।
भूले नहीं सत् कर्म को
माया का जब कहीं वार हो,
बह जाएँ शिव के प्यार में,
विघ्नों की जब बौछार हो।
दृष्टि हमारी ऐसी हो,
दानव भी निज पथ त्याग दें,
मानव के सच्चे प्यार को
संसार में प्रवाह दे।
शान्ति छलकती हो नैनों से
मृदुला मुख का शृंगार हो,
होठों पे हो प्रभु की गरिमा
आँचल में सुखों का सार हो।
मस्तक पे चमकता तेज हो
कर्णों में शिव का हो गुँजन,
हिय में छलकता रहम हो,
हाथों में गुणों के हो कंगन।

"सुखद आश्चर्य"

ब्रह्माकुमारी राज, देहली

भगवान मेरा बाबा लगता है,
मेरा पग उसके निर्देशन में बढ़ता है।
भगवान मेरा बाबा लगता है॥
मेरा दिन उसी की याद में चढ़ता,
मेरा मन उसी के भाव में पलता,
उसके हाथ मेरी जीवन-डोर,
सदा वही मेरा ओर-छोर;
मेरा दिल उसी से सुलझता है।
भगवान मेरा बाबा लगता है॥
जग जान न पाया जिसको,
हमें खुद पढ़ाता आकर वो,
जिसके दर्शन को लोग तरसते,
हम तो उसकी गोद में हँसते,
सोचकर ये, रोमाँच हो उठता है।
भगवान मेरा बाबा लगता है॥
दुनिया थकी जिसे पुकार-पुकार कर,
वह नित सुलाता हमें पुचकार-पुचकार कर;
मन न चित्त था जो बना रहा वह,
रोज आकर मुरली सुना रहा वह;
यही मुझे सुखद आश्चर्य लगता है।
भगवान मेरा बाबा लगता है॥

'प्यार' का भूखा इन्सान

—ब्रह्माकुमारी सुषमा, कोलाबा, बम्बई

आज निर्मल स्नेह की भूख जहाँ-तहाँ देखने में आती है। चाहे मानव हो या पशु, सभी इसके प्यासे हैं। हरेक स्नेह का भूखा है। स्नेह पाना सब चाहते हैं, देना नहीं चाहते। अथवा यूँ कहें कि स्नेह पाने के बाद देना चाहते हैं। लेकिन पहल कौन करे? सब एक-दूसरे से पाने की लालसा में लाइन लगाये खड़े हैं। पशु भी प्यार पाने के बाद, स्नेह मिलने के बाद कान, पूँछ हिला कर प्यार व्यक्त कर देते हैं, कृतज्ञता प्रकट करने लगते हैं। यदि मनुष्य होकर भी हमने सिर्फ़ स्नेह से स्नेह दिखाया तो कौनसी बड़ी बात की? सिर्फ़ पशुओं का धर्म निभाया। मनुष्य होकर भी मनुष्य के धर्म को न पाल सके। हम मानव समुदाय के लिए इससे बढ़ कर शर्म की बात और क्या हो सकती है?

सच पूछिये तो वर्तमान समय के अशान्ति, भ्रष्टाचार, पापाचार, दुराचार, अनाचार आदि-आदि का कारण सिर्फ़ निर्मल स्नेह का अभाव है। जहाँ स्नेह होता है वहाँ अशान्ति नहीं होती क्योंकि वहाँ ग़लती पर ध्यान नहीं जाता, वहाँ सहन हो जाता है। वह व्यक्ति दोबारा वैसी ग़लती न करे, इसके लिए प्यार से, तरह-तरह से उस व्यक्ति को समझाया जाता है। इसके विपरीत यदि स्नेह का स्थान नफ़रत ने ले रक्खा है तो छोटी-सी ग़लती रूप चिंगारी ज्वालामुखी-सम बन अशान्ति का वातावरण निर्मित कर देगी। चैतन्य की तो बात ही जाने दीजिये, यदि आपने प्यार से बीज बोया, सींचा तभी पौधे से फूल प्रस्फुटित होंगे, फल आयेगा, बरना वह बीज भी सड़ कर व्यर्थ ही चला जायेगा।

प्यार देही या विदेही

निर्मल प्यार अथवा स्नेह संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। यह एक ऐसा जादू है जिससे दुश्मन भी मित्र बन जाता है। इस संजीवनी बूटी से आशाहीन व्यक्ति भी आशावान बन कल्पनातीत कमाल कर सकता है। कहा जाता है रोगी (Patient) पर डॉक्टर की सहानुभूति व प्यार भरे शब्दों का जितना असर होता है वह भी दवा का सा काम करता है। निर्मल स्नेह का अभाव मानसिक तनाव को बढ़ा देता है, फलस्वरूप उस व्यक्ति में आत्मविश्वास का अभाव हो जाता है, निर्भयता का स्थान भय ले लेता है।

देह क्षणभंगुर है अतएव दैहिक प्यार भी क्षणिक ही होते हैं। कोई व्यक्ति आज सब कुछ उत्सर्ग करने को तैयार है पर दूसरे ही क्षण जान लेने पर भी उतारू हो जाता है। क्योंकि देह-भाव में स्वार्थ समाया है जबकि विदेही में निःस्वार्थ भाव रहता है। इससे तो सभी सहमत हैं कि स्वार्थ में दुःख एवम् निःस्वार्थता में सुख समाया हुआ रहता है। निश्चय ही दैहिक स्नेह का फल दुःख होगा और विदेही स्नेह का प्रतिफल सुख। सुख-शान्ति चाहते सब हैं पर करते दैहिक स्नेह हैं। इनकी उपलब्धि का केन्द्र तो रूहानी स्नेह है, आत्मिक दृष्टि है, विदेही वृत्ति है। पाँच तत्वों से प्यार का प्रतिफल—काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार है, और यही तो घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, अशान्ति एवं दुःखों के जन्मदाता हैं। रूहानी स्नेह हमे प्रभु के नज़दीक तो ले ही जाता है, इससे हम प्रभु प्यारे तो बनते ही हैं, साथ-साथ लोकप्रिय भी हो जाते हैं और स्वयं प्रिय तो इन दोनों का ही फल है।

बात सीधी है। कोयले के संसर्ग में आने वाले को कालिख ज़रूर लगेगी और इत्र के संसर्ग मे आने वाला सुवासित हो जाता है। तनाव से भरा व्यक्ति सिवाय तनाव उत्पन्न करने के और क्या कर सकता

है। दूसरी ओर एक रूहानी स्नेह वाला अपने रूहानी पिता, परमपिता परमात्मा शिव से निहाल तो होता ही है परन्तु औरों को भी रूहानी नज़रों से निहाल कर देता है। ऐसी आत्माओं की पावन दृष्टि निर्मल स्नेह औरों में संजीवता लाती है। परन्तु इस तमो-प्रधान दुनिया में एक का स्नेह और दूसरे के नफ़रत रूपी थपेड़े खा-खाकर, मनुष्य बेपेंदी के लोटे जैसा हो गया है। कभी इधर, कभी उधर। सच्चा प्यार करना तो प्यार के सागर शिव बाबा से ही सीखना है। परमात्मिक प्यार ही आत्मिक प्यार सृजन करता है।

प्यार न होने का कारण

आपसी स्नेह अथवा प्यार न होने का कारण 'अनुमान' है। अनुमान से ही ईर्ष्या पैदा होती है। ईर्ष्या एवं अनुमान जहाँ मिल गये, समझिये अशान्ति, कलह, दु:खों का साम्राज्य ही स्थापित हो गया। क्योंकि ईर्ष्या के कारण हम दूसरों के भाव को समझ नहीं पाते फलत: न तो स्वयं से सन्तुष्ट हो पाते हैं और न सम्पर्क में आये हुए व्यक्ति से ही। महाभारत और रामायण ईर्ष्या ही की तो उपज है। अन्ततो-गत्वा दूसरों की महिमा न सुन सकना अथवा सहन न होना, पक्षपात करना, दूसरों द्वारा बताई गयी कल्याणमयी बातों को न मानना, शक दृष्टि रखना, हर समय अपनी बात सिद्ध करने की कोशिश करते रहना, मनमत पर चलना, संगदोष में आना, ईश्वरीय मर्यादाओं पर न चलना, विश्वासहीन हो जाना आदि-आदि का प्रादुर्भाव हो जाता है। अतएव जहाँ स्नेह नहीं रहता, वहाँ सदा ही टकराव बना रहता है।

अब क्या करें ?

सदैव यह चित्त में रखना चाहिये कि जबकि हरेक आत्मा शिव बाबा की सन्तान है अत: निश्चय ही हरेक आत्मा में कोई-न-कोई गुण तो अवश्य ही विद्यमान है। सच्चाई-सफाई से, आपसी लेन-देन द्वारा बातों का स्पष्टीकरण कर लेने से अनुमान को जगह नहीं मिलेगी क्योंकि बीती बातों में अनुमान लगाना तो स्वयं को पतन की ओर अग्रसर करना है। दूसरी बात सदैव दूसरों के गुण को देखो और वर्णन करो। इससे आपसी स्नेह बढ़ेगा और स्नेह से स्नेही की कमियों को कम किया जा सकता है।

अतएव प्यार के चाहने वाले प्राणियो, प्यार देना भी सीखो तब ही प्यार लेने के पात्र बन सकेंगे। जब हम सभी से प्यार चाहते हैं तो स्वयं से पूछना चाहिये कि क्या हमने प्यार का इतना दान दिया है जो प्रतिफल में हम प्यार चाहते हैं ? यदि आप स्वयं को परमात्मा के नज़दीक लाना चाहते हैं तो मास्टर प्यार के सागर बन सबको प्यार के मोती लुटाते चलिये और पुनश्च वे ही मोती फिर आपके गले में पिरोये जायेंगे। फलस्वरूप सारा विश्व स्नेह की वर्षा करने लगेगा क्योंकि सर्व के प्यार पाने का आधार है कि हम इस पुरानी दुनिया के वैभवों से देह के आकर्षणों से न्यारा व प्यारा बन चलते रहें। इसलिये हे ज्ञानी और योगी आत्माओं, आप भगवान का प्यार प्राप्त करो। सदा यह याद रक्खो कि एक भगवान का प्यार ही सच्चा प्यार है। जिसने भगवान के प्यार का अनुभव नहीं किया होगा, वह अवश्य ही दूसरों के आगे प्यार का भिखारी बना रहेगा। **शिव बाबा के ये महावाक्य हैं कि यदि तुम मुझसे प्रीत रक्खो तो धर्मराज भी तुम्हें प्यार करेगा।** इसलिये सर्व आत्माओं को प्यार देते चलो, परन्तु लेने की इच्छा न रक्खो। क्योंकि हम सब हैं प्यार के सागर की प्यार की कठपुतलियाँ। तो चले आओ उस प्यार के सागर के पास जहाँ से ही सच्चा प्यार मिलता है।

साधक को देहभान से परे होने का अभ्यास करना चाहिये। क्योंकि दैहिक स्नेह में तो दु:ख ही समाया हुआ है। जैसे विज्ञान का हरेक आविष्कार सुख के लिये ही हुआ है परन्तु उसमें भी दु:ख निहित है। एक अणु (Atom) से बिजली भी प्राप्त की जा सकती है जो सुख का साधन है और दूसरी ओर वही

अणु (Atom) बम (Bomb) बन कर विनाश करने की भी शक्ति रखता है। यह हमारे प्रयोग पर निर्भर करता है। इसी तरह शरीर में रहते हुए भी हमें आत्म स्थित हो परमात्मा से योग लगा स्नेह शक्ति प्राप्त करनी है ताकि स्वयं भी सुखी रहें और अन्य संतप्त आत्माओं को भी स्नेह शान्ति प्रदान करते रहें। सवाल तो साधक पर आकर ठहर जाता है कि वह दृढ़ प्रतिज्ञ होकर क्या करता है !

सम्वाद

संगठन शक्ति

—ब्रह्माकुमार राजकिरण, मुजफ्फरनगर

मोहन—सोहन भाई, ओम शान्ति···

सोहन—ओम शान्ति, आइये-आइये, बहुत समय के बाद आना हुआ।

मोहन—हाँ, अभी हाल में ही हमने दो जगह मेले किये, उसमें काफी व्यस्त रहे। और आशातीत सफलता भी मिली। सभी का सहयोग सराहनीय था।

सोहन – हमने भी एक बड़ा कार्यक्रम रक्खा था, परन्तु इन सब सेवाओं में सिरदर्दी बहुत है। कोई रूठ जाते हैं, कोई सहयोग नहीं देते···। सेवा तो श्रेष्ठ है ही, पर कष्ट देखते हुए तो बस शान्ति में रहने को ही मन करता है।

मोहन—सोहन भाई, सेवा में कष्ट तो है ही, परन्तु वास्तव में कष्ट ही तो सेवा की कसौटी है। सच्ची सेवा ही वह है जिसमें कुछ कष्ट सहना पड़े।

सोहन—हाँ, यह बात तो सत्य है। कष्टों से तो हम नहीं घबराते, पर जब अपने ही साथी विघ्न रूप बन जायें तो मन उखड़ ही जाता है।

मोहन—सोहन भाई, संगठन को एकता के सूत्र में बाँधना – यह भी एक अलौकिक शक्ति है। ईश्वरीय कला है। इसकी महती आवश्यकता है। क्या हम नहीं जानते कि संगठन शक्ति न होने के कारण ही कईयों ने अपनी राजाई गँवा दी। वो उपलब्धी, जो उन्हें काफी कष्टों से मिली थी, आपसी फूट से उन्हें छोड़नी पड़ी।

सोहन—हाँ, लेकिन संगठन में कई ऐसी आत्माएँ आ जाती हैं, जो संगठन शक्ति को बलवान नहीं होने देतीं। वास्तव में मैं तो उन्हें यज्ञ में विघ्न डालने वाला ही मानता हूँ। जो सहयोग देने की बजाय समस्यायें खड़ी कर देते हैं।

मोहन—सोहन भाई, संगठन शक्ति द्वारा कोई भी कार्य कठिन नहीं, परन्तु संगठन को मज़बूत रखने के लिए कुछ बातों का ध्यान परमावश्यक है।

सोहन—अवश्य बताइये, आज आप आये हैं तो चलो आपसे कुछ अमृत ही प्राप्त किया जाये।

मोहन—सर्वप्रथम तो संगठन में हमारे बोल उत्साह वर्द्धक हों। अगर हम दूसरों को उत्साह दिलाना नहीं जानते हैं तो कम-से-कम चुप रहना भी लाभकारी है। इससे सभी आत्माओं में कार्य करने की उमंग, सहयोग की भावना और स्नेह बना रहता है।

सोहन—परन्तु कईयों की तो आदत ही होती है, दूसरों के हर कार्य की टीका करते रहना। ग़लती होने पर तो क्या, अच्छा कार्य करने पर भी वे अपनी टीका-टिप्पणी किये बिना नहीं रह सकते।

मोहन—वास्तव में हमें किसी पर भी टीका करने का अधिकार नहीं। देखो, दुनिया में भी टीका वो करते हैं जिनमें कुछ भी करने का बल नहीं

होता। जब कोई विद्वान किसी की वृत्ति पर कोई टीका लिखता है, तो उसके लिए उसे उस लेखक का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। उसकी भावनाओं व परिस्थितियों का ज्ञान भी आवश्यक है। नहीं तो उस टीकाकार को सिवाय मूर्ख के और कोई संज्ञा नहीं दी जा सकती। परन्तु कई आत्माएँ, जो दूसरों को बिना जाने-पहचाने ही टीका करती रहती हैं, जो संगठित शक्ति के पतन का कारण बनती हैं, ऐसी आत्माओं के ऊपर से परमपिता की दृष्टि भी हट जाती है।

सोहन—मोहन भाई, संगठन में जब सभी की राय माँगी जाती है तो या तो कई लोग राय देते ही नहीं। अगर राय देते भी हैं तो वे सोचते हैं कि मेरी राय अवश्य ही मानी जाये। और अगर उसकी राय पास नहीं होती तो उसमें असहयोग की सी भावना आ जाती है।

मोहन—सोहन भाई, यह तो सर्वथा अनुचित है। इसमें हमें बाबा द्वारा बताये हुए बालक व मालिक के आदेश का पालन करना चाहिये। क्योंकि हम जो कुछ भी कार्य कर रहे हैं वो ईश्वरीय है। अतः इसकी सफलता के लिए हमें ईश्वरीय आदेशों को प्राथमिकता देनी चाहिए। हमें ज़िद्दी नहीं होना चाहिए। ज़िद्दीपन सहयोग में ज़हर फैलाने वाला महारोग है। इससे स्वयं को व दूसरों को सुरक्षित रखना चाहिए।

सोहन—इसी प्रकार मैंने भी एक अनुभव किया, कि संगठन शक्ति को मज़बूत करने के लिए सभी के प्रति सत्कार की भावना मुख्य पहलू है। चाहे हमारा छोटा कार्य करता हो या बड़ा, हम सभी को सम्मान दें। किसी की भी अवहेलना न करें। नहीं तो योग्य आत्माएँ भी असन्तुष्ट होकर दूर जाने की सोचने लगती हैं।

मोहन—सर्व का सत्कार तो आवश्यक है ही, साथ ही इतनी ही आवश्यक यह बात भी है कि हम स्वयं भी दूसरों से हल्के रहें। दूसरों को भी स्वयं से हल्का रक्खे। हमें अपने उस व्यवहार पर ध्यान रखना चाहिए, जिससे आत्माएँ हमसे भारी होती हैं और हमसे कुछ कहने में हिचकती हैं।

सोहन—यह तो बहुत ही लाभप्रद बात है।

मोहन—इतना ही नहीं, दूसरों की ग़लती होने पर भी हम भारी न हों, अपशब्दों का प्रयोग कर, निराशात्मक भावनाएँ उत्पन्न न करें। बल्कि उस आत्मा को इतना उमंग दिलायें कि वह उससे भी श्रेष्ठ कार्य कर सके। ब्रह्मा बाबा का यह गुण प्रख्यात था। कोई भी ग़लती होने पर भारी हुई आत्मा को बाबा हल्का कर उमंग भर देते थे कि वह आत्मा सदा ही ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बन जाती थी।

सोहन—हाँ, मैं महसूस करता हूँ कि यह ग़लती मैं प्रायः करता हूँ। संगठन में कार्य करने में ग़लतियों का होना साधारण बात है, परन्तु हमें अपने ही सहयोगियों पर उबल नहीं पड़ना चाहिए।

मोहन—इन सभी बातों में बहुत ही धैर्य व शान्त चित्त की आवश्यकता होती है। अगर हम हर बात को धैर्यता से हल करने के अभ्यासी होंगे तो कहीं भी असफलता नहीं होगी। वास्तव में समस्याओं में वही व्यक्ति उलझता है, या संगठन भारी उसे ही लगता है जो स्वयं की स्थिति को उलझा देता है।

सोहन—मैं तो अपने संगठन में एक और बात ध्यान रखता हूँ कि सभी को आगे बढ़ाया जाय। मन में यह भावना न रहे कि मेरा ही नाम हो···नाम तो हमें शिव बाबा का प्रत्यक्ष करना है। इसलिए सभी को अवसर दिया जाय।

मोहन—हाँ, 'पहले आप' का पाठ पक्का हो। यह त्याग हमारे संगठन को एक आदर्श बना देता है। इससे आत्माओं में होड़ की भावना समाप्त होकर महानता आ जाती है। और वास्तव में जितनी खुशी व प्राप्ति दूसरों को आगे बढ़ाने में होती है उतना केवल स्वयं ही हर अवसर लेने में नहीं।

सोहन—हाँ, वास्तव में तो महान वही है, जो

अन्य आत्माओं को आगे बढ़ता देख खुश हो। जिन आत्माओं को ईश्वरीय सन्तान बनाने के लिए हम अपार धन राशि ख़र्च कर रहे थे—तो आज जब वे शिव बाबा की बन गईं तो उन्हें उन्नति करता देख हम खुश क्यों न हों।

मोहन—इसी के साथ-ही-साथ सभी कार्यकर्त्ताओं को खुश व सन्तुष्ट रक्खा जाये। उन्हें सब सुविधायें भी दी जायें, और कार्य करने के लिए स्वतन्त्र रक्खा जाये, इससे उनमें जिम्मेदारी को सम्भालने का गुण आ जाता है।

सोहन—हाँ, सभी कार्यकर्त्ता इतने खुश हों जो इशारे पर काम करें, तब तो सचमुच हमें कुछ भी कष्ट नहीं होगा।

मोहन—हम अपने सभी सहयोगी आत्माओं के मन के भावों से बुद्धि की सामर्थ्य से परिचित हों, और उसका यथार्थ लाभ ईश्वरीय सेवा में उठायें। हमारा कर्त्तव्य है कि हम ईश्वरीय सेवा सभी में प्रसाद के रूप में बाँट दें, ताकि सभी आत्माएँ स्वामित्व व अपनेपन की भावना से कार्यरत हों, किसी के भी मन में असहयोग की भावना न हो।

सोहन—हाँ, बहुत अच्छी-अच्छी बातें हुईं आज। हम अपने संगठन को मज़बूत करेंगे। सभी बातें भुलाकर व समाकर एक होकर रहेंगे। तब ही तो हम ईश्वरीय कार्य में अधिक सफल होंगे।

मोहन—और तभी सेवा का प्रत्यक्ष फल—'आनन्द' हमें प्राप्त होगा। सेवा की उलझनें समाप्त हो जायेंगी।

सोहन—अच्छा मोहन भाई, बहुत-बहुत धन्यवाद ! आज आपने मेरे मन को हल्का कर दिया। अच्छा, ओम शान्ति !

मोहन—ओम शान्ति !

ब्रह्मा बाप की महिमा महान

लेखक ब्र० कु० मोहन [अमृतसर]

(स्थाई) ब्रह्मा बाप की महिमा महान, उनमें आते शिव भगवान
उनके द्वारा शिव करते हैं, सर्व धर्मों का कल्याण

(१) प्रजापिता कहते हैं उनको, संसार को रचाते हैं
ब्राह्मणों के वो आदि पिता हैं, आदिदेव कहलाते हैं
संगमयुग में मिलती है, उनकी सबको पहचान
ब्रह्मा बाप की महिमा महान·····

(२) भाग्यशाली रथ यही है, भागीरथ कहलाते हैं
उनके मुख के द्वारा शिव, शास्त्र सार सुनाते हैं
उनसे ही शिव की है, ऊँचे से ऊँची शान
ब्रह्मा बाप की महिमा महान·····

'जीवन व्यर्थ नहीं है'

ब्र० कु० सीता, भैरहवा, वेस्ट नेपाल

मेरी सखी कहती थी,
नारी जीवन व्यर्थ है।
शायद !
उस बेचारी का
'जीवन'
किसी के अधिकार में हो चुका होगा !
और
वह पर पुरुषाधीन हो चुकी होगी !!
और अपना सब कुछ खो चुकी होगी !!
इसलिए,
वह अपने आपको व्यर्थ समझती होगी !
और,
सभी नारियों के जीवन की
अपने जीवन से
तुलना करती होगी !!
क्यों नहीं ?
आज का वातावरण ही ऐसा बन चुका है,
जिसे देख
नारी ही क्यों
नर भी
ऐसा समझने लगे हैं।
परन्तु
इसी समाज में,
इसी संसार में
एक ऐसा भी नर-नारी जीवन है
जो प्रायः सर्व समर्थ है
जिसको समझना
सभी के लिए कठिन होगा।
क्योंकि,
उनका वह जीवन
पवित्र है,
अतिन्द्रिय सुख के झूले में है।
आपको असंभव प्रतीत होगा
क्योंकि
यह कमाल,
किसी साधारण व्यक्ति का नहीं,
प्रकृति के किसी पुतले का नहीं,
यह तो प्रकृति से परे,
उस परम शक्ति का है।
जिसे ही, हम सभी
परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं।
उसके ही ज्ञान-योग के बल से
हमने अपने जीवन को समर्थ पाया है !!
इसलिए, सखी !
मैं कहती हूँ
जीवन व्यर्थ नहीं है।
चाहे वह
नर का हो या नारी का
सौंप के देखो अपना जीवन प्रभु को
तो मिल जाए ख़ज़ाना स्वर्ग का !!

—:o:—

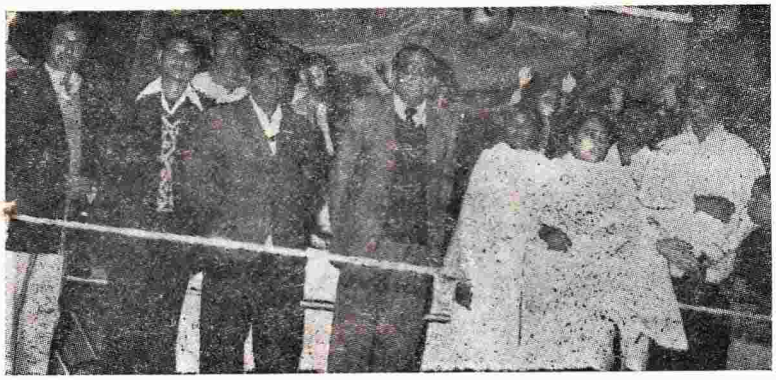

झांसी में आयोजित मेले में वाइस चान्सलर मेले का अवलोकन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। चित्र में अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

व्यावर टाऊन हाल में स्मृति दिवस का कार्यक्रम किया गया। मंच पर ब्र० कु० राधा गंगा मुख्य अतिथि भ्राता टीकम चन्द लोढ़ा जी दिखाई दे रहे हैं।

जयपुर संग्रहालय में प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाज सेवक तेज करण जी, राजयोग संग्रहालय के चित्रों का अवलोकन करते हुए दिखाई दे रहे हैं ब्र० कु०पूनम उन्हें समझा रहीं हैं।

सोला पुर में संक्रात के समय आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में महाराष्ट्र के अन्न व नागरी वित्त मंत्री मेले का अवलोकन कर रहे हैं पास में अन्य भाई खड़े हैं।

जूना गढ़ सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित वी० आई० पी० स्नेह मिलन में प्रमुख वी० डी० पटेल (लायन्स प्र०) प्रवचन कर रहे हैं बीच में ठाकुर साहब (डि० मजिस्ट्रेट) व ब्र० कु० दमयन्ती बहन बैठी हैं।

जूनागढ़ सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित राजयोग सेमिनार का उद्घाटन डा० के० आर शाह तथा ब्र० कु० सरला जी कर रही हैं, साथ में कुछ मुख्य भाई व बहने खड़ी दिखाई दे रही हैं।

तेजपुर आसाम में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी प्रवचन के पश्चात वहां के मुखिया के साथ ब्र० कु० नीलम व अन्य बहन भाई खड़े हैं।

पुरी के एक हाई स्कूल में ब्र० कु० निरूपमा ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं, मंच पर ब्र०कु० प्रतिभा, भारती, हैडमास्टर जी, व अन्य भाई बैठे हैं।

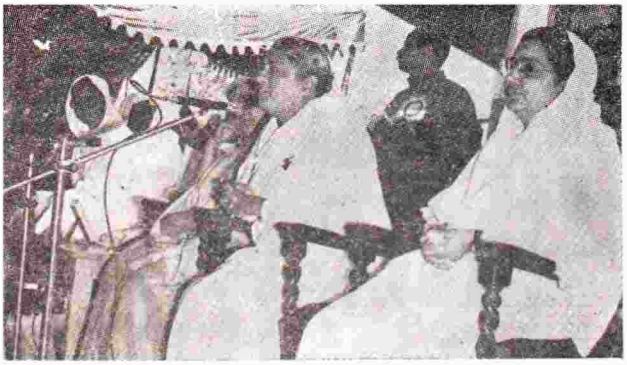

जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय गीता सम्मेलन में ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी ब्र० कु० चक्रधारी जी, महिला सम्मेलन की संचालिका एवं जैन साध्वी बहिन मणिपुत्ता जी उपस्थित हैं ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी गीता के महत्व पर प्रकाश डाल रही हैं ।

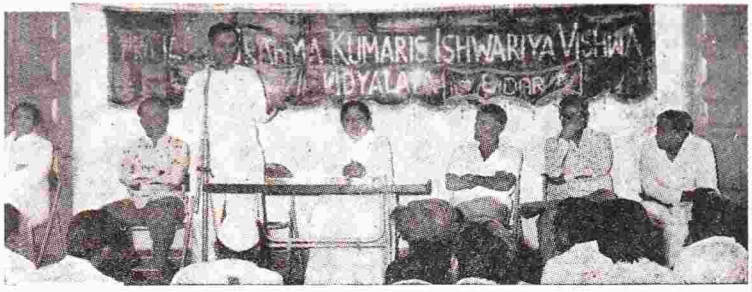

बीदर सेवा केन्द्र की ओर से उदयगीर में प्रदर्शनी के आयोजन पर ब्र० कु० प्रेम सिंह प्रवचन कर रहे हैं । साथ में ब्र० कु० भारती, डा० कोटलबार जी, ब्र०कु० सतोष, तहसीलदार जी बैठे हैं ।

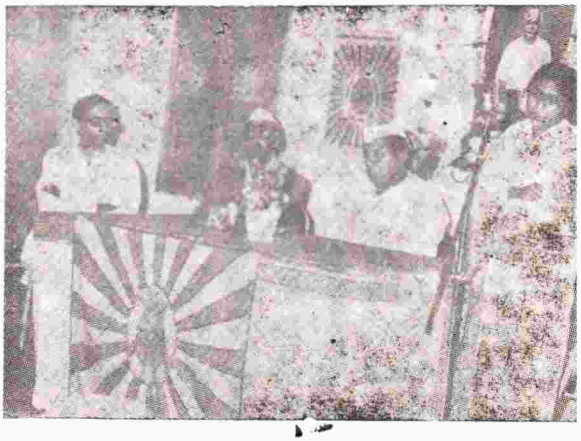

हिंगणघाट में स्मृति दिवस समारोह के अवसर पर ब्र० कु० नंदा, पिताश्री के अलौकिक जीवन का परिचय दे रही हैं । साथ में ग्रामोण विकास संस्था के अध्यक्ष भ्राता कृपारांव जी तथा अन्य भाई बैठे हैं ।

१८ जनवरी का 'पिता श्री' के स्मृति दिवस समारोह के अवसर पर चित्र में बाएं से दांएं बैठे है :—
ब्र० कु० आशा, ब्र० कु० कृष्णा, मुख्य अथिति भ्राता डा० एस० के० जयस्वाल तथा भ्राता एम० के० तिवारी जी ।

झज्जर में आयोजित चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के सुप्रसिद्ध डा० रामेश्वर दयाल जी टेप काटकर कर रहे हैं । साथ में ब्र० कु० गीता जी ब्र० कु० राजेश व अन्य बहिन-भाई खड़े हैं ।

नवसारी में डाक्टरों का एक योग शिविर का आयोजन किया गया था। ब्र० कु० गिरिश भाई योग शिविर में समझा रहे हैं।

इलाहबाद सेवा केन्द्र की ओर से खुल्दाबाद में शिव मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। वहां के गुरूद्वारे के महन्त ज्ञानी मक्खन सिंह प्रदर्शनी का अवलोकन कर रहे हैं। उनके साथ ब्र० कु० कमलेश जी, उषा जी खड़ी है।

जोरहाट में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता मूल चन्द जी जैन द्वारा किया गया। पास में ब्र० कु० सत्यवती जी, ब्र० कु० रजनी बहन खड़ी हैं।

कृष्णा नगर सेवा केन्द्र को ओर से विश्व कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में स्कूलों की ईश्वरीय सेवा किया गया कुछ विद्यार्थियों में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें उमा कुमारी प्रथम, शुभ रत्न द्वीतीय, पंकज त्रितीय, को ब्र० कु० कमलमनि पुरस्कार दे रही हैं।

"गुप्त चुनाव"

—ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, माउन्ट आब

विश्व पर एक राज्य, एक धर्म स्थापित करने के लिए शिव बाबा ने ब्रह्मा तन का आधार लिया और गुह्य ज्ञान व राजयोग के द्वारा आत्माओं को विश्व पर राज्य करने की ताकत दी। राजयोग के द्वारा आत्मा सर्वशक्तिवान परमात्मा से शक्ति प्राप्त करती है और पहले अपने सम्पूर्ण विकर्मों का विनाश करती है और फिर उसके अनुसार उसको भविष्य की प्रालब्ध प्राप्त होती है।

वर्तमान समय भारत में चुनाव प्रणाली के द्वारा शासकों को पद प्राप्त होता है। जनता जिस पार्टी का समर्थन करे, उसे ही राज्य प्राप्त होगा। अर्थात् प्रजातन्त्र में प्रजा ही सर्वोपरि है, वह चाहे जिसे राज्य प्रदान करे। परन्तु पाण्डव सरकार जिसका सर्वोपरि स्वयं भगवान है, वह स्वयं अपने शासकों का चयन करता है। प्रजातन्त्र में लोकसभा का चुनाव होता है और परमात्मा लोकप्रिय सभा का चयन करते हैं।

परमात्मा अभी अपने सतयुग की राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव करा रहे हैं। उनका जब ये अलौकिक चुनाव पूर्ण हो जाएगा, तब सारे विश्व की सभी लोकसभाएँ विश्वपति द्वारा भंग कर दी जायेंगी और लोकप्रिय सभा का निर्माण कर दिया जायेगा।

आज एक संसद सदस्य बनने के लिए मनुष्य कितना प्रयास करते हैं, कितना धन खर्च करते हैं। वे रात-दिन एक कर देते हैं और चुनाव अभियान में दूसरों की निंदा करते हैं व अनेक प्रकार के कुसाधन अपनाते हैं, तब कहीं वे जनता का समर्थन प्राप्त कर पाते हैं और एक छोटी-सी सीट जीत पाते हैं। जब कि शिव बाबा इस समय हमें विश्व का राज्य-अधिकार देने के लिए कुछ धारणाएँ सिखाने का पुरुषार्थ करा रहे हैं। तो हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि इतनी बड़ी व अखुट, अखण्ड प्राप्ति के लिए हम क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं। उनका सारा पुरुषार्थ तो केवल ५ वर्ष के लिए है, ५ वर्ष के बाद पुनः वही भाग-दौड करनी पड़ेगी। परन्तु हमें तो एक बार पुरुषार्थ करना है और एक बार हमारा चुनाव हो जाने के बाद, हमें २५०० वर्ष तक कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं होगी। वहाँ न हमें किसी विरोधी दल का भय होगा न हारने की आशा। वहाँ हमारा राज्य कोई छीन भी नहीं सकेगा। यहाँ तो ५ वर्ष की सीट के लिए मनुष्य अथाह धन खर्च करते हैं, और पाते क्या हैं, चिन्ताओं, समस्याओं व परेशानियों से भरा हुआ क्षणिक सुख। जो कभी भी दुःख में बदल जाता है। जबकि सतयुग की राजाई सम्पूर्ण सुखदाई होती है और जिसे प्राप्त करने के लिए विशेष रूप से धन की आवश्यकता नहीं होती।

आजकल चुनाव में प्रत्याशी के कुछ गुणों या विशेष योग्यताओं का ध्यान नहीं रखा जाता। परन्तु परमात्मा जो स्वर्ग की बादशाही देने के लिए आत्माओं का चयन कर रहे हैं, उन्हें लगभग १०८ आत्माएँ चाहिये जो स्वर्ग में राज्य कर सकें। उसके लिए उन्होंने कुछ योग्यताएँ निश्चित की हैं। जो उन योग्यताओं में परिपूर्ण होगा, उसे ही विश्व की राजाई प्राप्त हो जायेगी। जिनमें वे गुण अधिकतम होंगे उन्हें सतयुग के प्रारम्भ में राजाई मिल जाएगी और जिनमें कुछ कम, उन्हें बाद में।

इस गुप्त चुनाव की योग्यताएँ मुख्य रूप से ५ हैं:

१. **पवित्रता**—स्वर्ग के राज्य के प्रत्याशियों में पवित्रता स्वाभाविक रूप से वृत्ति तक भी होनी

चाहिए क्योंकि अपनी कर्मेन्द्रियों पर राज्य करने वाला ही विश्व पर राज्य कर सकेगा। पवित्रता द्वारा हर कर्मेन्द्रिय को सुगन्धित करने वाले ही स्वर्ग के राज्य की सुगन्ध पा सकेंगे।

२. योग—सहज और निरन्तर रूप से राजयोग के अभ्यासी ही इस राज्य सत्ता को पाने के अधिकारी होंगे। योग द्वारा जिनके अंग-अंग शीतल हो गये होंगे वही आत्माएँ शीतल राज्य पद की अधिकारी होंगी। सतयुग के विश्व महाराजन श्री लक्ष्मी श्री नारायण भी सम्पूर्ण शक्ति सम्पन्न होंगे। अतः राजयोग द्वारा जो आत्माएँ सर्वशक्तिवान् परमात्मा से सम्पूर्ण शक्ति प्राप्त करेंगी, उन्हीं का चयन स्वर्गिक राज्य पद के लिए हो सकेगा।

३. नियन्त्रण शक्ति व प्रशासन शक्ति—(Controlling Power and Ruling Power)—इस चुनाव में यह देखा जायेगा कि अपने मन, बुद्धि व संस्कारों को नियन्त्रण में रखने की शक्ति कहाँ तक आई है क्योंकि जो आत्मा (राज्य अधिकारी) यहाँ ही अपने मन, बुद्धि (महामन्त्रियों) को नियन्त्रण में नहीं रख सकता, वह विश्व पर नियन्त्रण कैसे करेगा? जो अपनी इन तीन सूक्ष्म शक्तियों पर राज्य करना जानता है, उसमें यहाँ ही प्रशासन करने की योग्यताएँ भरती जाती हैं। वहाँ का प्रशासन स्वयं ही सुचारु रूप से चलेगा, कोई कड़े कानून या व्यवस्था बनानी नहीं पड़ेगी। तो यह प्रशासन का गुण जो यहाँ धारण करेंगे उन्हें ही ऐसे सुखद राज्य का अधिकार प्राप्त होगा।

४. सर्व की सन्तुष्टि—परमपिता अपने चयन में इस बात का ध्यान रखेंगे कि उस आत्मा में सर्व को सन्तुष्ट करने की सामर्थ्य है! सर्व की सन्तुष्टि की वोट ही उसे इस चुनाव में विजयी बनायेगी। जो अपनी कटु वाणी, तीखे स्वभाव या दुःखदायी कर्मों द्वारा दूसरों को असन्तुष्ट नहीं करते, वो ही यहाँ सर्व के मन के राजा होंगे और भविष्य में भी।

इस प्रकार सर्व को सन्तुष्ट करने के लिए कई दैवी गुणों की तो आवश्यकता पड़ती ही है। जैसे सहनशीलता, मृदुता, गम्भीरता, सेवा-भाव आदि-आदि।

५. स्थापना के कार्य में सहयोगी—जैसे महात्मा गांधी ने जब भारत को स्वतंत्र कराया, तब जो नेता उनके सहयोगी बने, फलस्वरूप बाद में उन्हें भारत का राज्य-अधिकार मिला, वे ही नेता मंत्री बने।

ठीक इसी प्रकार विश्वपिता परमात्मा इस समय सम्पूर्ण विश्व को माया के राज्य से मुक्त कर रहे हैं। विश्व को स्वर्ग बना रहे हैं तो इस स्थापना के श्रेष्ठ कार्य में जो आत्माएँ तन, मन धन से जितनी अधिक सहयोगी बनेंगी, उतना ही भविष्य में उन्हें राज्य-अधिकार प्राप्त होगा।

इसलिए जिस भी प्रकार से सहयोगी बनने में आप समर्थ हैं उस साधन द्वारा ही अगर आप इस कार्य में सम्पूर्ण सहयोगी बनेंगे तो आपका भी चयन हो जायेगा।

इस प्रकार इन ५ विशेषताओं के आधार पर ही स्वर्ग के राज्य-अधिकारियों का चुनाव हो रहा है। अभी तक परिणाम घोषित नहीं किये गये हैं। इसलिए अन्तिम घोषणा के पूर्व ही तीव्र वेग से पुरुषार्थ करके विश्व का राज्य-अधिकार जीता जा सकता है।

—:o:—

मधुबन

बी० के० रामस्वरूप नहरौली, बाह, आगरा (यू० पी०)

हर व्यक्ति चाहता है कि वह तन-मन-धन से सुख-सम्पन्न रहे। इस जीवन को ही देव-तुल्य जीवन की उपमा मिलती है। निश्चित है कि कभी इस भूमि पर दैवी-सम्प्रदाय हुआ होगा जिसकी यादगार भारत में विभिन्न स्थानों पर देवी-देवताओं के मन्दिरों के रूप में मिलती है। इससे सिद्ध होता है कि समय परिवर्तनशील है। उसके अनुकूल ही हमारे कर्मों में परिवर्तन होता आया है। कर्मों के बदलने से हमारे विचारों में भी अन्तर होता रहता है। जिस परिस्थिति में मानव गुज़रता है उसी के अनुकूल उसके विचारों की उत्पत्ति होती है। एक समय वह था जब उसको किसी भी प्रकार के संकल्पों को रचने की कोई आवश्यकता न थी। आज समय के प्रतिकूल होने से मन के विचार भी उसके अनुकूल हो गये हैं। अतः वर्तमान समय में मनुष्य अनेक विचारों के अधीन है जिससे उसकी ऊर्जा का पतन होता जा रहा है।

ऊर्जा बुद्धि की वे तरंगें हैं जो मन के संकल्पों के प्रत्ययों (रूप) को चित्रित करती हैं। इन प्रत्ययों की रसना का अनुभव करना ही मन की इच्छा है। किसी भी वस्तु के सम्पर्क में आने से उसको उपभोग में लाने के लिये जो विचार उत्पन्न करते हैं वे ही बुद्धि की ऊर्जा की तरंगें हैं, जिसे हम मन कहते हैं। जब ये तरंगें दैहिक रसना की ओर मुड़ जाती हैं तो मनुष्य का जीवन भी भौतिक बन जाता है। यह रसना ही उसकी ऊर्जा के पतन का कारण है। यदि इस ऊर्जा की तरंगें आध्यात्मिकता की ओर मोड़ दी जावें तो उसकी शक्ति पुनः आत्मा में भरने लगती है। अर्थात् बुद्धि में ऊर्जा का प्रकाश आ जाता है। यह तेज ही मन की शान्ति का प्रतीक है। जब मन की तरंगें आत्मिक हो जाती हैं तब उसमें प्रत्येक आत्मा के प्रति मधुर संकल्प उठने लगते हैं। जब मन में मधुरता का प्रखर हो जाता है तो मनुष्य जिस शक्ति को प्राप्त करना चाहे, उसे सरलतापूर्वक कर सकता है। यह मधुरता ही उसे नम्रता सिखाती है और यह नम्रता ही दूसरों में बिनम्रता की ज्योति जगाती है। इस गुण से ही सम्पर्क में आने वाले लोग उसके अधीन हो जाते हैं। यदि मानव में कुछ अपनत्व की भावना आ जाती है तो वहाँ मधुरता के बजाय कठोरता का रूप हो जाता है जो संकल्पों को पूर्ण होने में विघ्नों का कारण बन जाता है।

इस मधुरता के कारण ही इस मधुबन की विशेषता का गायन है। जहाँ मनुष्य जाकर मधुर बनकर ही लौटते हैं जिसका संगीत के रूप में नाम प्रचलित है कि "मधुबन खुशबू देता है……।" यह खुशबू है कौन-सी? वह स्थान कहाँ है जहाँ खुशबू भरी पड़ी है? क्यों न इस मधुबन में जाकर इस खुशबू को भी देखें? उस वृन्दाबन के मधुवन में वैसे तो सैकड़ों व्यक्ति आते-जाते हैं क्या वे वहाँ से खुशबूदार ही बन कर आते होंगे? यदि स्थान के स्पर्श से ही व्यक्तियों में खुशबू आने लगती, तो शायद यह संसार आज खुशबू से महक उठता। वहाँ लोग जाते अवश्य हैं सिर्फ़ दर्शन के नाते। वहाँ जो ज्ञान की खुशबू होनी चाहिये वह न होने से, वे इस मधुरता की खुशबू से वंचित रह जाते हैं।

यदि आप इस मधुबन की वास्तविक खुशबू को लेना ही चाहते हैं तो वह ले सकते हैं। वह मधुबन भी नज़दीक है। इस मधुबन का नाम है मन। जब मन के सम्बन्ध आत्मिक (मधुर) बन जाते हैं तो यह मधुमन बनकर मधुरता की खुशबू देने लगता है। इसी मधुर मन का ही गायन है। इस संसार में ऐसी

कोई मधुर खुशबू नहीं है जो मन को मधुर बना दे। सिर्फ़ ईश्वरीय ज्ञान ही एक है जो मनुष्य के मन को मधुमन बना देता है। इसमें ही सभी रसों का समावेश है, जिस रस की मधुरता लेनी हो, ले सकते हैं। अर्थात् यह वही मधुर आनन्द है जिन आत्माओं ने जिस मधुबन में श्रीकृष्ण के साथ गोप-गोपियों के रूप में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव किया था। उसी समय का प्रमाण आज हम प्रजापिता ब्रह्मा के साथ रहकर इस मधुबन में उसी परमपिता परमात्मा शिव की ज्ञान मुरली से दैवी गुणों के अति-इन्द्रिय सुख से अपना मन पुनः मधुर बना रहे हैं। केवल मन की मधुरता ही नहीं बल्कि इन दैवी गुणों से हम पुनः दैवी स्वराज्य में चले जाते हैं।

हम परमधाम के राही हैं

ब्र० कु० दिनेश कुमार गुप्ता, सहारनपुर

हम परमधाम के राही हैं, हमें वापिस घर को जाना है।
रुकना न कहीं, थकना न कहीं, आगे ही बढ़ते जाना है॥
बाधायें आती जो पथ में, उनको सेज बनाना है,
भूले-भटके बच्चों को भी, साथ चलाते जाना है,
अज्ञान नींद में सोये हैं जो उनको आज जगाना है,
हम परमधाम के राही हैं.....
पीछे न देखना है मुड़कर, इस दुनिया में क्या होगा अब,
माया का होगा सर्वनाश और रावण सही जलेगा अब,
अनमोल हैं संगम की घड़ियाँ, ये समय बड़ा सुहाना है,
हम परमधाम के रही हैं.....
रूप माया के देख हिलें नहीं, आगे पग रखते जाना है,
फ़रिश्ता रूप बनकर हमें, इष्टदेव पद पाना है,
अन्धकार में भटकते जो, उन्हें उज्ज्वल पथ दिखलाना है,
हम परमधाम के राही हैं.....
पकड़ा दामन बाबा का, वो पार हमें ले जायेगा,
जो दामन को छोड़ेगा, धर्मराज के कोड़े खायेगा,
हम हैं रुहानी पंडे, हमें सबको पार लगाना है,
हम परमधाम के राही हैं.....
बाबा के अनुगामी बन, बैकुण्ठ यहीं अब लायेंगे,
बाबा की श्रीमत धारण कर, भव-सिन्धु पार हो जायेंगे,
बाबा ही अपना सब-कुछ है, बाबा से सब-कुछ पाना है,
हम परमधाम के राही हैं.....

सतयुग और दैवी संस्कृति

ब्रह्माकुमार रमेश शाह, बम्बई

परमपिता शिव परमात्मा से इस समय पर हमें अखूट खज़ाना मिल रहा है। वर्तमान काल में हम आत्माएँ जो ज्ञान पढ़ रही हैं, उसके चार स्पष्ट स्वरूप हैं—ज्ञान, योग, धारणा और सेवा अर्थात् ज्ञान सागर के ज्ञान के ये चार मुख्य विषय (Subjects) हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि चारों ही आपस में एक-दूसरे से भिन्न हैं किन्तु इन चार दृष्टि-कोणों से शिव बाबा द्वारा प्राप्त ज्ञान को हम समझ सकते हैं। जैसे शरीर एक है परन्तु हाथ, पांव, आंख आदि भिन्न-भिन्न इन्द्रियां हैं और हरेक इन्द्रिय का कर्तव्य अपना है, उसी तरह इन चारों का भी रूप, प्रयोग तथा प्राप्ति अलग-अलग हैं। उद्भव स्थान एक है परन्तु परिणाम अलग-अलग हैं। और चारों के प्रमाण, परिमाण और परिणाम अलग-अलग हैं। विश्व के इतिहास में इन चारों बातों का इतना अलग-अलग प्रभाव है कि ऐसा लगता है जैसे कि बीज स्वरूप शिव पिता से निकली ज्ञान-सरिता अपने स्वरूप से सारे विश्व के इतिहास को झाँक रही है। इतिहास की आँखों से इन चार स्वरूपों का जब हम विराट दर्शन करते हैं, तब इन चारों का सच्चा वास्तविक दर्शन होता है। बीज का विस्तार कितना विचक्षण है कि इसका स्वरूप व सुन्दरता विश्व के इतिहास तथा भूगोल का भी नया दर्शन कराता है और उसी भव्यता और श्रेष्ठता के विस्तार को समझते हैं, तब बीज की महिमा समझ में आती है और तब परमात्मा के रचयिता स्वरूप की वास्तविकता की सच्ची पहचान होती है।

ईश्वरीय ज्ञान में सभी धर्मों का सार है

ज्ञान सागर का ज्ञान आज हमें मुरलियों द्वारा मिलता है। परन्तु इस ज्ञान का विस्तार है भविष्य के धर्म और विभिन्न धर्मों की बुनियाद (Foundation) है आज का यह ईश्वरीय ज्ञान। विश्व के धर्मों को जिन्होंने पढ़ा होगा वे ज़रूर जब यह ईश्वरीय ज्ञान पढ़ेंगे तब लगेगा कि इस ईश्वरीय ज्ञान में सभी धर्मों के ज्ञान का सार है। और उसी कारण आख़िर में सभी धर्मों के भेद ख़त्म होकर एक धर्म यहाँ से बनेंगे। फिर द्वापर युग के बाद एक से अनेक धर्म बनेंगे अर्थात् इस वर्तमान ज्ञान के अन्दर सभी धर्मों के ज्ञान को समाने की शक्ति है। शक्ति के इस स्वरूप को समझना ही सच्ची पहचान है—धर्म की और ज्ञान की। और उसी कारण विभिन्न धर्म को मानने वाले इस ईश्वरीय ज्ञान को समझने का पुरुषार्थ करके सफलता प्राप्त करते हैं। इस ज्ञान में भविष्य के हिन्दु धर्म की भक्ति के बीज के चिन्ह हैं तो इस्लाम धर्म के पाँच बार नमाज़ पढ़ने की भी बात है, तो बुद्ध धर्म की अहिंसा की वास्तविकता का दर्शन भी है, तो कयामत की भी बात है। विभिन्न धर्मों के ब्रह्मा—सरस्वती, आदम और बीबी एडम और ईव, आदि देव-आदि देवी आदि सब बातें यहाँ हैं। हिन्दु धर्म का मत्स्यावतार आदि अवतार की रोचक कथा का प्रतिबिम्ब है तो ईसाई धर्म की नोहा के आर्क (Noah's Arch) की बात भी है। एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद तथा उनसे बिन्दु रूप में अद्वैत मिलन भी है तो साथ में भविष्य प्रारब्ध रूपी वरसे की याद का द्वैत भाव भी है। परमात्मा, प्रकृति और पुरुष के खेल का सांख्य दर्शन भी है। विष्णु के प्रतीक स्वरूप बचपन के श्रीकृष्ण की याद का बल्लभाचार्य सम्प्रदाय की यादगार है तो नारायण रूप से बाला जी, वेंकुटेश्वर, या वेंकटेश्वर की

याद भी है। भक्ति मार्ग की शक्ति पूजा की शक्तियों का निर्माण करने वाला भी यह ज्ञान है। परमात्मा को 'ज्ञान सूर्य' कहा है उसी कारण जापान के शिंटो धर्म तथा ईरान के ज़रथुस्त धर्म में सूर्य-पूजा हुई, तो उसी से विश्व में अनेक सूर्य मन्दिर बने। सभी धर्मों को मान्य ऐसे दैवी गुणों की वास्तविक पहचान भी इसी ज्ञान से हमें मिलती है। कितना न सुन्दर रोचक विराट भविष्य अर्थात् भविष्य के विराट धर्मों का कल्प वृक्ष के रूप में साक्षात्कार कराता है।

राजयोग सभी प्रकार की व्यवस्था और अनुशासन का मूल है

राजयोग अर्थात् वर्तमान में सभी योगों में राजा समान तथा भविष्य में राजाई पद की प्राप्ति कराने वाला, आने वाले भविष्य में नियमन, संतुलन तथा मार्ग दर्शन कराने वाला यह योग है। यह राजयोग का विराट स्वरूप है भविष्य के सत-त्रेता युग की अखण्ड, अटल, निर्विघ्न यथा राजा-रानी तथा प्रजा ऐसा दैवी राज्य सो स्वराज्य। इसी में विज्ञान के अणु का (आत्मा का) ज्ञान है तो अणुशासन सो अनुशासन अर्थात् आत्मा का कर्मेन्द्रिय पर राज-संचालन भी है। ये वही वर्तमान का राजयोग है जिससे भविष्य के विश्व महाराजन-महारानी, राजा-रानी, साहूकार, प्रजा, दास-दासी आदि का निर्माण होता है। ये योग केवल राजाई योग नहीं परन्तु व्यवस्था योग भी है अर्थात् इसी परमातम् योग से विश्व की सभी प्रकार की व्यवस्थायें अपना सतो-प्रधान सामुदायिक स्वरूप और रूप धारण करती हैं। अर्थ व्यवस्था, समाज व्यवस्था, कला, संगीत, शारीरिक तन्दुरुस्ती, कानून व्यवस्था, विज्ञान के साधन का उपलब्धि की व्यवस्था आदि सभी व्यवस्थाओं (Systems) का सुचारु सम्मेलन और स्नेह-मिलन वहाँ पर इसी राजयोग का परिणाम है। इसी-लिये ये योग, राजयोग, प्रयोग, संयोग, वियोग, सह-योग, विनियोग, मंत्रयोग, तंत्रयोग, हठयोग, स्वयंसिद्ध योग, जययोग, अष्टाँग योग आदि-आदि अनेक नाम-रूप से भविष्य में प्रसिद्ध होना है, क्योंकि वह सबकी सिद्धि अर्थात् सर्वशक्तिवान परमात्मा से प्राप्त सर्व सिद्धि स्वरूप की शक्तियाँ हैं। ईश्वरीय ज्ञान में स्वयं परमात्मा के शब्द प्रमाण और माध्यम हैं तो राजयोग में वह सर्वशक्तिवान की शक्ति का अनुभव प्रमाण है। राजयोग में परमात्मा की याद का महा-मंत्र भी है तो उसी की याद का तंत्र और यंत्र भी है। और ये तंत्र और यंत्र भविष्य के तांत्रिकता और यांत्रिकता का उद्बोधक हैं। योग की एकाग्रता, विज्ञान की एकाग्रता का मार्गदर्शक बनती है। ये राजयोग ही अतीन्द्रिय सुख का झूला है तो नये और पुराने विश्व को जोड़ने वाला सेतु (Bridge) है। यही राजयोग वर्तमान के भोग और रोग का जवाब है तो भविष्य का सुख और काल पर विजयी दीर्घ-आयु सम्पन्न जीवन का दाता है। यही राजयोग भविष्य का योगानुयोग बनता है। वर्तमान बेहदका वैराग्य द्वापर से हदका वैराग्य बन करके हिन्दु धर्म में संन्यास धर्म का साधन बनता है।

दैवी गुणों की धारणा दैवी संस्कृति की नींव है

शिवपिता परमात्मा अब विशेष रूप से धारणा का ज्ञान दे रहे हैं। दैवी गुणों की जीवन में धारणा कराते हैं। धारणा का धर्म के साथ इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि उसी कारण शास्त्रों में 'धर्म' शब्द के अनेक अर्थ है। उसी में एक अर्थ है—'धर्म वह है जिस की जीवन में धारणा हुई है।' 'धर्म' का अर्थ सिर्फ़ बाह्य व्यवहार या निशान नहीं है। दैवी गुणों की धारणा करा कर शिव बाबा हमारी वृत्ति और व्यवहार में परिवर्तन करते हैं। विकारों के कारण हमारी वृत्ति और प्रवृत्ति विकृत बन गई थी। विकृत वृत्ति और प्रवृत्ति में परिवर्तन लाकर शिव बाबा उन्हें सुवृत्ति और सुकृति बनाते हैं। सुकृति के आधार पर संस्कृति बनती है। अर्थात् आज की दैवी गुणों की धारणा भविष्य की संस्कृति की नींव बनती है।

वर्तमान ज्ञान से भविष्य के दैवी धर्म अर्थात्

देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। राजयोग से भविष्य की दैवी राजाई प्रस्थापित होती है तो धारणा से भविष्य की दैवी संस्कृति की स्थापना होती है। और यह दैवी संस्कृति बाद में विश्व के सभी संस्कृति की जनेता बनती है। यह दैवी गुणों की धारणा होती है उसी कारण वह गुण संस्कार बनते हैं। दैवी गुणों का ज्ञान और गुणों का संस्कार में फ़र्क है। द्वापर युग के बाद दैवी गुणों के ज्ञान रहा परन्तु धारणा न रही। धारणा न रहो, उसी कारण संस्कारों में परिवर्तन आ गया और उस दैवी संस्कृति और समाज में भी परिवर्तन आया। सतयुग और त्रेतायुग को 'स्वर्ग' अर्थात श्रेष्ठ समाज उसी लिए गाया है क्योंकि वहाँ पर गुणों की धारणा थी, और व्यवहार श्रेष्ठ था। सुगंध जैसे फैलती है, ऐसे यह संस्कृति फैलती गई। और उसी कारण से वह दैवी संस्कृति बीज रूप बन गई। जैसे आज यह ज्ञान का विस्तार शीघ्र से शीघ्र वेग से हो रहा है। विदेशों में उसी तरह से संस्कृति का विस्तार इतिहास में बहुत तेज़ रफ़्तार से हुआ।

धारणा की बातें बहुत आकर्षक हैं। जैसे माया अनेक रूपों से सबको मोहित करती है, उसी तरह धारणा भी अनेक रूपों से सबको आकर्षित करती है। शक्कर को किसी भी नाम से पुकारो फिर भी शक्कर की मिठास वही है, उसी तरह से धारणा की बातें ऐसी हैं कि उसी में धर्म, देश, भाषा, धन, वर्ग आदि-आदि भेद नहीं है। ज्ञान में परमात्मा के शब्द, योग में परमात्मा की शक्ति प्रमाण है उसी तरह धारणा में साक्षात्कार मूर्त बनना यह प्रमाण है। धारणा का साक्षात्कार मूर्त बनना—यही सबसे बड़ी बात है। ऐसा साक्षात्कार मूर्त बनने में लौकिक दुनिया की पढ़ाई, धन, उम्र आदि इतने आवश्यक अंग नहीं हैं। अनपढ़ या अल्प पढ़ाई वाला व्यक्ति भी गुणों की धारणा के आधार पर दर्पण बन सकता है। और यही दर्पण सर्व को अपने जीवन को शिव बाबा को अर्पण करने की प्रेरणा देता है। अर्थात्, धारणा का वर्तमान संगम युग में पुरुषार्थ तथा साक्षात्कार मूर्त के रूप में, भविष्य सतयुग तथा त्रेतायुग में संस्कृति के रूप में और द्वापर युग के बाद विस्तृत होती हुई नयी संस्कृति को मज़बूत करने में बहुत बड़ा पार्ट है। द्वापर से देवी-देवताओं का जो गायन और पूजन होता है, उसी में भी यह धारणा का पार्ट मुख्य है।

स्वर्ग की दिव्य स्वर्णिम संस्कृति

स्वर्ग एक सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। स्वर्ग अर्थात् दैवी संस्कृति और सभ्यता। इसके बारे में लोगों में अज्ञान है। स्वर्ग को लोगों ने सिर्फ धर्म की दृष्टि से समझने का प्रयत्न किया है। उसी कारण इतिहासकार स्वर्ग की बातों को कल्पना समझ कर छोड़ देता है। परन्तु स्वर्ग वास्तव में दैवी संस्कृति और सभ्यता है। उसी दृष्टिकोण से इतिहासकार विचार करें तो विश्व के आदि काल के इतिहास के बारे में जो अज्ञान प्रचलित है वह खत्म हो जायेगा। 'राम'—यह सिर्फ़ राजाराम या रामराज्य की कल्पना का राम नहीं, परन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम तथा अंहिसा आदि दैवी गुण रूपी परमधर्म वाली संस्कृति का प्रतिनिधि है। ऐसा समझें तब इतिहासकार भारत के इतिहास के गुप्तवंश को भारत का सुवर्ण युग कहने की बजाय सतयुग के दैवी राज्य को भारत का स्वर्णिम युग मानेगा। भारत का इतिहासकार पश्चिम के इतिहास वेत्ताओं के मापदण्ड से भारत को आंकता है। अमेरिका जैसे देश की संस्कृति ही सिर्फ़ २००/२५० वर्ष पुरानी है तो अब आधुनिक अल्प मापदण्ड के द्वारा पुरानी संस्कृति और सभ्यता कैसे मापी जाय ?

इतिहासकारों की भूल

एक कहानी है कि पाठशाला में ग़रीबी पर सब को निबन्ध लिखने के लिए कहा गया। तो एक श्रीमंत बच्ची जिसने कभी भी ग़रीबी का अनुभव नहीं किया था, लिखा—ग़रीब वह है जिसके एक

बंगला, एक गाड़ी, एक नौकर, एक फैक्टरी आदि होंगे। ऐसा उसने अपने माप-दण्ड से लिखा। उसी तरह कलियुग में पैदा हुई पिछली कुछ सदियों से अस्तित्व में आयी हुई संस्कृतियाँ अपने माप-दण्ड के आधार पर कहते हैं कि पहले पत्थर युग और उसी तरह की संस्कृति थी। भारत की प्राचीन गुफ़ाओं का भी इतिहास है। प्रकृति के ज़्यादा नज़दीक रहने की मानवी सहज इच्छा से मानव ने अपने घूमने-फिरने के स्थान पर गुफाएँ बना कर उसी में कभी-कभी निवास किया। उसका अर्थ यह नहीं कि वह पत्थर युग है। आज भी माउन्ट आबू में कई संन्यासी आदि अपनी साधनाओं अर्थ गुफाओं में रहते हैं। उसे देख कर भविष्य का इतिहासकार कहे कि माउन्ट आबू में सब जंगली पत्थर युगी लोग रहते थे या बम्बई में बड़े-बड़े महल जैसे मकान भी हैं तो छोटी-छोटी झोपड़ियां भी हैं, इतिहासकार को अगर झोपड़ियाँ ही सबूत के रूप में मिलें तो ऐसा ही सोचेगा अपने अनुमान के आधार पर कि बम्बई में भी सभी पत्थर युगी लोग पत्तों आदि की झोंपड़ी बना कर रहते थे। अनुचित अल्प प्रमाण द्वारा लिखे गए इतिहासों में सबसे अधिक दैवी संस्कृति की हँसी (Joke) की है। सारे ही इतिहास को बदली कर दिया है। वह दूसरी कहानी भी है कि गुरु ने मरीज़ के घर के आंगन में आम के (Mangoes) छिलके तथा गुठलियों का ढेर देख कर मरीज़ को पूछा कि क्या बहुत आम खाये थे? उसी माप-दण्ड को स्वीकार करके शिष्य ने दूसरे मरीज़ के आंगन में पड़ी हुई घोड़े की लीद को देख कर पूछा कि क्या बहुत लीद खाई थी? तब उस मरीज़ ने उस शिष्य का क्या हाल-बेहाल किया यह तो सब जानते हैं। ऐसे ही अनुचित प्रमाणों के आधार पर विश्व के आदिकाल के इतिहास को लिखने वालों ने गड़बड़ की है।

आज की दुनिया की ही बात है। सुन्दर रमणीक स्थान पर घूमने के लिए सबकी इच्छा होती है। विदेश में भी रमणीक स्थान हैं तो भारत में भी हैं। परन्तु वह संस्कृति के रंग में मस्त होकर विदेशियों ने अपने उन रमणीक स्थानों पर रहने के लिए होटल और मौज करने के लिए (Casinos) अर्थात् शराब घर और जुआ घर बनाये। नायगरा फ़ोल्स, होनो लुलु आदि स्थानों पर ये ही जीवन है—ये ही संस्कृति है। भारत में ऐसे स्थान पर मन्दिर तथा धर्मशाला बनी ताकि सब वहाँ आकर प्रकृति से प्रेरणा प्राप्त करें, धर्मशाला बनायी ताकि सबको रहने आदि का निशुल्क प्रबन्ध मिले। माथेरान में शारलेट लेक पर स्थित वह प्राचीन शिव मन्दिर भारत की दैवी संस्कृति का प्रतीक है कि द्वापर काल में रजो प्रधान संस्कृति के समय भी मानव प्रकृति से पुरुषोत्तम बनने की प्रेरणा की खोज में था। धर्म-शाला बना कर अपना धन समाज की सेवा में लगे ऐसी शुभ-भावना का समाजवादी विचार भारत की संस्कृति में शताब्दियों से है। समाजवाद कोई पश्चिम की संस्कृति की देन नहीं है। मेरा धन मेरा नहीं परन्तु समाज का है, ईश्वर का है, इस श्रेष्ठ गुण की नींव कल्प पहले से पड़ी हुई है और ये सतयुग में संस्कार बन कर दैवी संस्कृति का प्रतीक बना।

अधिक विस्तार न हो जाये, इसके कारण दैवी संस्कृति पर ज़्यादा लिखा नहीं जाता इस लेख में। दैवी संस्कृति विश्व में सभी संस्कृतिओं की जनेता है यह बात इतिहासकार मान लें तो आदि मानव तथा आदि युग के बारे में जो उन्होंने ग़लत मान्यतायें रखी हैं, वे सब ख़त्म हो जायें। ये भ्रांत इतिहास जितना जल्दी बदली हो जाये उतना जल्दी विश्व का कल्याण होगा और इसीलिये संगठित प्रयत्न चाहिये।

—:o:—

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

लण्डन में रानी एलिज़बेथ को ऊषा बहन ईश्वरीय सन्देश दे रही हैं रानी जी बड़े ही प्रेमपूर्वक ईश्वरीय सन्देश स्वीकार कर रही हें।

न्यूयार्क में दीदी जी कुछ विदेशी भाई-बहनों के साथ दिखाई दे रही हैं।

ब्रह्माकुमारी प्रतिभा बहन केनिया में कुछ भाइयों को ईश्वरीय साहित्य देने के पश्चात ज्ञान चर्चा कर रही हैं।

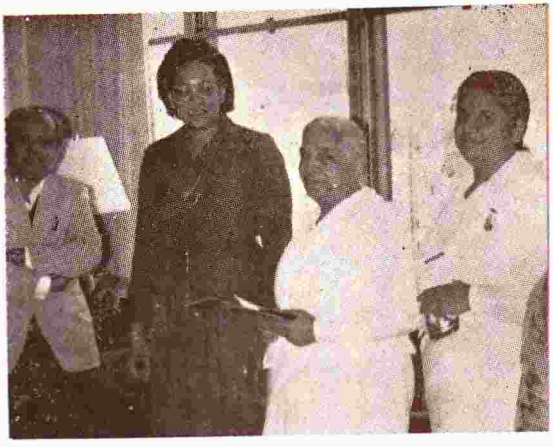

यूनेस्को में दीदी निर्मल शान्ता जी वहाँ के डिप्टी डायरेक्टर बहन जेक्वीलीन वाइन्टर के साथ दिखाई दे रहीं हैं।

मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाश मणि हुबली के हरिहर सेवा केन्द्र का उद्घाटन ज्योति जगाते हुए कर रही हैं। साथ में वहाँ के बहन-भाई दिखाई दे रहे हैं।

Regd No. D (DN) 178

भावनगर—महुआ शहर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन फंकशन में ब्र० कु० गीता परिचय दे रही हैं मंच पर नगर पालिका प्रमुख व अन्य भाई बैठे हैं।

जोधपुर में पंचम अन्तर्राष्ट्रीय गीता सम्मेलन के मंच पर ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी, हिज होलीनेस थाईलैंड, भूतपूर्व जगत गुरू शंकरा चार्य, स्वामी सत्यमित्रा जी तथा अन्य वक्तागण बैठे हैं।

चित्र में भ्राता अन्ना जोशी विधान सभा के मेम्बर अपना भाषण कर रहे हैं साथ में ब्र०कु० अशोक, ब्र० कु० राजन, ब्र० कु० ब्रज शान्ता डा० डिप्टी मेयर सतीश देसाई, व ब्र० कु० उर्मिला दिखाई दे रही हैं।

ऊपर चित्र में भ्राता तरून चटर्जी विधायक रायपुर ने विश्व-नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन रायपुर में किया, साथ में ब्र० कु० विमला खड़ी हैं।

करनाल में आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया, मंच पर इन्द्रजीत सिंह प्रधानाचार्य, डा० ओ० पी० चुग भ्राता आर० एल० गुप्ता, भ्राता लाल चन्द वत्स, ब्र० कु० चक्रधारी तथा बहने बैठी हैं।